हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार 19 अप्रैल 2026

9 समाज को परशुराम से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना...

10 मिट्टी-पानी की मुफ्त जांच से बदल रही 'खेती की तस्वीर'

Affiliated to CBSE
MR SCHOOL
MITTERPURA | ATELI
॥ तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥
A Name of Dedication, Hardwork and Sincerity
FOUNDATION / JEE / NEET COACHING with Aakash Faculty Experts
ADMISSION OPEN
Session 2026-27
MR SCHOOL Aakash Medical IIT-JEE Foundation
Aakash की FACULTY अब MR SCHOOL के साथ
MITTERPURA, NARNAUL (HR.)
9466945658, 9416903367
mrps530543@gmail.com www.mrpublicschool.com
NARNAUL ROAD, ATELI
8278085868, 9416903367
mrpsateli@gmail.com www.mrpsateli.in

खुद का नाम ठीक करने का ऑप्शन महीने भर से बंद, नागरिक इधर-उधर भटक रहे

परिवार पहचान पत्र की गलतियों से परेशान नागरिक नारनौल में महीनों से पेंडिंग हैं हजारों सुधार रिक्वेस्ट

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

हरियाणा सरकार की महत्वाकांक्षी योजना परिवार पहचान पत्र इन दिनों जिले के हजारों निवासियों के लिए सिरदर्द बनी हुई है। सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए अनिवार्य माने जाने वाले इस पहचान पत्र में त्रुटियों को ठीक करवाने के लिए नागरिक महीनों से सरकारी दफ्तरों के चक्कर काट रहे है लेकिन उनकी सुध लेने वाला कोई नहीं है।

सरकारी योजनाओं से वंचित हो रहे जरूरतमंद

स्थानीय निवासियों का कहना है कि परिवार पहचान पत्र के बिना वे सरकारी सुविधाओं का लाभ नहीं उठा पा रहे है। बुढ़ापा पेंशन, विधवा पेंशन, दिव्यांग पेंशन जैसी महत्वपूर्ण सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से लेकर फसल पंजीकरण तक के लिए पीपीपी का डेटा सही होना अनिवार्य है। सुमित कुमार, ऋषि देव सीएससी संचालक आदि पीड़ित नागरिकों का कहना है हमने पोर्टल पर रिक्वेस्ट तो डाल दी लेकिन नारनौल का प्रशासन इसे ठंडे बस्ते में डाले बैठा है। डेटा अपडेट न होने के कारण हमारे अनेक कार्य रुके हुए है और हम सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित हो रहे है। साथ ही परिवार पहचान पत्र में खुद का नाम ठीक करने और मेम्बर को दूसरी फैमली आईडी में स्थानांतरण करने का ऑप्शन भी बंद है। अब सीबीएसई बोर्ड ने अपना परीक्षा परिणाम जारी कर दिया है कुछ समय में हरियाणा बोर्ड का भी परिणाम आने वाला है। इसके बाद से ही कॉलेजों में दाखिला प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। विद्यार्थियों को परिवार पहचान पत्र में शैक्षणिक दस्तावेजों के अनुसार ही जानकारी दर्ज करवाए।

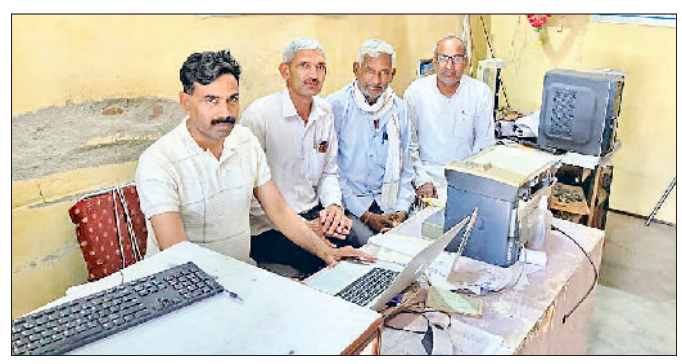
नारनौल। सिटीजन पोर्टल पर ऑनलाइन रिक्वेस्ट डलवाते आवेदक। फोटो: हरिभूमि

एक महीने से ज्यादा समय से अटकीं रिक्वेस्ट

मिली जानकारी के अनुसार जिले के सैकड़ों नागरिकों ने अपने परिवार पहचान पत्र में नाम, जन्म तिथि, आय या अन्य विवरणों को दुरुस्त करवाने के लिए सिटीजन पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन रिक्वेस्ट डाली थी। इन आवेदनों को सबमिट किए हुए एक महीने से भी अधिक का समय बीत चुका है लेकिन नारनौल कार्यालय के स्तर पर ये फाइलें अभी भी पेंडिंग पड़ी है। न तो इन त्रुटियों को वेरीफाई किया जा रहा है और न ही इन्हें रिजेक्ट किया गया है जिससे आवेदकों में भारी रोष है।

प्रशासन की चुप्पी पर सवाल

लोग अब सवाल उठा रहे है कि यदि ऑनलाइन व्यवस्था लागू है तो फिर वेरिफिकेशन के लिए महीनों का इंतजार क्यों करना पड़ रहा है? साथ ही जिले के लोगों को कार्यालय क्यों जाना पड़ रहा है? ये तो ऑनलाइन और ऑफलाइन व्यवस्था में कोई अंतर नहीं हुआ। लोगों ने जिला प्रशासन से मांग की है कि पेंडिंग पड़ी इन रिक्वेस्ट का जल्द से जल्द निपटारा किया जाए ताकि उन्हें बेवजह की परेशानियों का सामना न करना पड़े।

खबर संक्षेप

हादसे में बाइक सवार की जान गई

मंडी अटेली। राता कलां के समीप शुक्रवार सायं करीब सात बजे बाइक और गाड़ी की टक्कर में एक व्यक्ति की मौत हो गई। राता कलां रोड पर गढ़ी रूथल निवासी करीब 57 वर्षीय जितेंद्र पुत्र संपत सिंह अपनी बाइक पर जा रहे थे, तभी एक गाड़ी से उनकी टक्कर हो गई। हादसा इतना गंभीर था कि उनकी मौके पर ही मौत हो गई।

परशुराम जन्मोत्सव पर हवन एवं संगोष्ठी आज

सतनाली मंडी। भगवान परशुराम वेलफेयर सोसायटी सतनाली के तत्वावधान में रविवार को भगवान परशुराम जन्मोत्सव मनाया जाएगा। भगवान परशुराम वेलफेयर सोसायटी के निवर्तमान प्रधान शिवकुमार शास्त्री ने बताया कि श्री परशुराम पार्क में प्रातः सात बजे से हवन यज्ञ, संगोष्ठी एवं प्रसाद वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

गुजरवास में शतरंज प्रतियोगिता आज

मंडी अटेली। गांव गुजरवास में 19 अप्रैल को शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य लोगों को शतरंज जैसे बौद्धिक खेल के प्रति जागरूक करना और उन्हें इसे सीखने व सिखाने के लिए प्रेरित करना है। कमांडो सुमेर सिंह ने बताया कि शतरंज एक उत्कृष्ट मानसिक खेल है, समझने और सही समय पर निर्णय लेने की क्षमता को भी मजबूत बनाता है।

मंडलाना में शहीद ओमप्रकाश यादव की मूर्ति का अनावरण करने पहुंचे पूर्व मंत्री डा. अभयसिंह

अपने प्रतिद्वंदी का बिना नाम लिए पूर्व मंत्री बोले...हल को चलाने के लिए हल का बलद चाहिए, गोशाला का नहीं

सैनिक कल्याण मंत्री बनते ही शहीद परिवार के लिए 1 करोड़ राशि की मंजूर

शहीद ओमप्रकाश यादव ने मात्र 24 वर्ष की आयु में देश की रक्षा करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया था

सतीश सैनी ⏭ नारनौल

विधानसभा नारनौल के गांव मंडलाना में 29 जनवरी को राव इंद्रजीत सिंह ने शहीद नायब सुबेदार जगमाल सिंह की मूर्ति का अनावरण किया था। उसी गांव और उसी जगह पर अब 80 दिन बाद उनके प्रतिदंद्वी पूर्व सिंचाई मंत्री डा. अभयसिंह यादव ने शनिवार शहीद ओमप्रकाश यादव की मूर्ति का अनावरण किया।

इसके बाद जब फौज और अमर शहीद होने का विषय था तो अपने भाषण में कहा कि उन्हें पांच-छह माह ही प्रदेश का सैनिक कल्याण मंत्री बनने का मौका मिला था। इसी छोटे से समय में ही शहीद परिवार को अनुग्रह राशिक 50 लाख से बढ़ाकर एक करोड़ देने की मंजूरी दिलाई थी। वह बात अलग है कि बाद में आचार संहिता लग गई और नोटिफिकेशन चुनाव के बाद में हुआ। डॉ. अभय सिंह यहीं नहीं रूके, उन्हें दोबारा अपने प्रतिदंद्वी का नाम लिए बिना कहा कि हल को चलाने के लिए हल के बलद की ही जरूरत होती है। गौशाला का बलद नहीं चला सकता। मतलब जो काम करें उसके सिर पर हाथ भी फेर दिया करो।

आपको बताते चले कि शहीद ओमप्रकाश यादव मात्र 24 वर्ष की आयु में देश की रक्षा करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया था। 18 अप्रैल 1980 को सिक्किम के नाथूला दर्रे के पास करीब 14 हजार फीट की ऊंचाई पर वे शहीद हो गए थे। उनके दो बेटे है। एक बेटा भारतीय सेना से सेवानिवृत हो चुका है, जबकि दूसरा अग्निशमन विभाग में अपनी सेवाएं दे रहा है।

शनिवार को उनकी मूर्ति का अनावरण किया। इस दौरान पूर्व सिंचाई मंत्री डा. अभय सिंह यादव मुख्य अतिथि थे। वहीं ब्रिगेडियर मोहनसिंह शेखावत ने अध्यक्षता की। शहीद परिवार कल्याण फाउंडेशन के अध्यक्ष डा. टीसी राव विशिष्ट अतिथि के तौर पर वहां मौजूद रहे। इस दौरान शहीद परिवार को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित भी किया गया।

नारनौल। अमर शहीद ओमप्रकाश यादव की मूर्ति का अनावरण करते हुए। फोटो: हरिभूमि

काम करने की इच्छा हो तो हर समस्या का समाधान

पूर्व मंत्री ने कहा कि व्यक्ति के अंदर इतनी प्रतिभा होती है, हर काम कर सकता है। समाधान हर समस्या का है, पर शर्तें है उस समस्या को दिल से लगानी पड़ती है। पार्टी के एक बड़े नेता ने पूछा डॉक्टर साहब पानी का इतना बड़ा काम कैसे कर दिया। मैंने कहा कि पानी ने ही नौकरी छुड़वाई। जब मैं इस इलाके में आता था तो यह पूरा इलाका खाली रहता था। उस वक्त मेरे दिमाग में यह बात आ गई थी कि समाधान भी है और तरीका भी पता है। इसलिए सोचा मरे बिना शहीद नहीं हुआ जाता। नौकरी छोड़ते है और देखते है कुछ मिल जाता है तो करते है। आपका धन्यवाद करता हूं मुझे मौका मिला और यह काम करके दिखाया। दूसरी बात ओर छोटी की कहूंगा। पहले हल जोड़ा करते थे। दिनभर बैल से हल चलाते थे और शाम को जब उसे चारा दाना कुछ डालते थे। फिर बैलों के शरीर पर हाथ फेरते हुए उसे सहलाते थे। मैं बचपन में नोट करता था, पर अब उसका मतलब समझमें आने लगा है। जब बैलों को सहलाते थे तो वह उसके प्रति संवेदना थी। उनको इतना जताना चाहता था कि तुम मेरे लिए बहुत काम कर रहे हो। शाबास बहुत बढ़िया। लगे रहे मैं तुम्हारे साथ हूं। तो भाई अगर कोई काम करने वाला है तो उसके सिर पर हाथ भी फेर दिया करो। क्यूंकि बात यह है कि काम तो जो हल का बलद है वहीं आवै सै। गऊशाला के बलद से अगर गड़वाल में से गाड़ी भी निकलवाओंगे तो वह नहीं निकाल पाएगा। इसलिए काम हर व्यक्ति को करना चाहिए। जो काम करें उनको प्रेरित करना चाहिए।

फौजी परिवार से नहीं, पर दर्द समझता हूं, तभी बढ़वाई राशि

पूर्व मंत्री डा. अभय सिंह यादव ने कहा कि शहीद की जब हम बात करते है तो प्राण से बड़ी कोई कुर्बानी नहीं होती। शहीद से बड़ा कोई सम्मान नहीं होता। केवल शहीद ही नहीं परिवार को जानते हुए भी फौज की नौकरी में कभी भी कुछ भी हो सकता है। फिर भी भेजते है बल्कि प्रेरित भी करते है। मुझे याद है जब साल 2014 से 2019 तक जो विधानसभा की टर्म थी। उसमें एक दिन बजट पर चर्चा हो रही थी। ध्यान है उस टाइम खिलाड़ियों के लिए कुछ पुरूस्कार राशि की घोषणा की गई थी। वहां बैठे बैठे दिमाग में बात आई और खिलाड़ी प्रदेश व देश का सम्मान बढ़ाते हुए मेडल लेकर आते है, जब हम उनको सम्मान निधि करोड़ों में देते है तो शहीद जो अपना प्राण दे देता है, उसके लिए तो दुनियार ही खत्म हो जाती है। कहते है जान है तो जहान है। उसके लिए भी करोड़ों में सम्मान निधि होनी चाहिए। मैं खड़ा हुआ और विधानसभा में कहा कि अच्छी बात है खिलाड़ियों को सम्मान निधि दी जाती है लेकिन एक ओर वर्ग है, जिसका योगदान देश के लिए सर्वोच्च है। शहीद को सम्मान राशि 50 लाख से बढ़ाकर एक करोड़ कर दी जाए। खैर उस वक्त यह बात सिरे नहीं चढ़ी, लेकिन किस्मत से पांच छह माह के लिए मुझे सैनिक कल्याण मंत्री के रूप में काम करने का मौका मिला। पहली मीटिंग में अधिकारियों से कहा कि एक बार यह मांग रखी थी, उसका क्या रहा। अधिकारियों से कहा कि अब कर लेते है। फाइल बनाकर लाओ। मैं खुद मुख्यमंत्री से मिलकर इसको मंजूर करवाता हूं। मेरे मंत्री रहते हुए माननीय मुख्यमंत्री से यह स्वीकृति एक करोड़ की करवाई। ध्यान हो उसके बाद आचार संहिता लग गई थी। उसकी नोटिफिकेशन चुनाव के बाद में हुई है। अब शहीद को एक करोड़ की राशि सम्मान के तौर पर परिवार को दी जाती है।

पटरी पार करते वक्त सरेली के प्राइमरी टीचर की मौत

नारनौल। रेलवे स्टेशन के नजदीक सायंकाल को करीब पौने पांच बजे एक व्यक्ति डीएफसी लाइनों पर मालगाड़ी की चपेट में आ गया, जिससे उसके पैर कट गए और मौत हो गई। गांव सरेली निवासी करीब 43 वर्षीय महेश भाटिया कुछ समय से नारनौल रह रहा था और वह एक ढाणी के प्राइमरी स्कूल में सरकारी टीचर लगा हुआ था। शाम को वह रेलवे स्टेशन के नजदीक जब डीएफसी लाइनों को पार कर रहा था, तब अचानक मालगाड़ी आने से चपेट में आ गया, जिससे उसकी मौत हो गई। जीआरपी के आईओ धर्मवीर सिंह ने बताया कि मृतक के पास से एक डायरी में मोबाइल नंबरों पर संपर्क किया तो उसकी पहचान महेश टीचर के रूप में हुई।

युवक को पिकअप ने मारी टक्कर, मौत

मंडी अटेली। गांव कलवाड़ी में खाना खाकर अपनी पत्नी के साथ टहलने निकले एक व्यक्ति की सड़क हादसे में मौत हो गई। गत 16 अप्रैल रात्रि करीब 9 बजे कलवाड़ी गांव के समीप एक निजी स्कूल के पास 54 वर्षीय नरेश पुत्र ओमप्रकाश अपनी पत्नी के साथ टहल रहे थे। इसी दौरान पीछे से आ रही एक पिकअप गाड़ी ने उन्हें टक्कर मार दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। घायल अवस्था में उन्हें तुरंत नारनौल के एक अस्पताल में भर्ती कराया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। दौंगड़ा पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम करवाया और बाद में शव परिजनों को सौंप दिया।

मां-बहन से मारपीट करने का वीडियो वायरल होने पर पुलिस हरकत में

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

इलाके में एक सनसनीखेज वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें कथित तौर एक युवक अपनी ही मां एवं बहन के साथ मारपीट कर उन्हें घर से निकालने का प्रयास कर रहा है। मां-बेटी अस्पताल में भर्ती हैं। इस मामले में पुलिस भी हरकत में आई है, जिस पर पुलिस ने दोनों पक्षों को थाने बुलाया है।

निवाजनगर गांव में शुक्रवार दोपहर करीब 12 बजे कृष्ण कुमार नामक युवक ने घर में घुसकर मां राजबाला और बहन रवीना को घर से निकाल दिया। बहन रवीना का आरोप है कि कृष्ण अपनी पत्नी अक्षिता, साली और साढ़ू को लेकर घर पहुंचा। घर के अंदर घुसते ही वे वीडियो बनाने लगे। रवीना का कहना है कि कृष्ण ने करीब दो साल पहले लव-मैरिज की थी। इसके बाद से ही वह पत्नी के साथ गुरुग्राम में रहता है। कृष्ण अब गांव वाले घर पर भी अपना अधिकार जमाना चाहता है। कई बार उसे, मां-बाप को घर से बाहर निकालने की कोशिश कर चुका है। रवीना के अनुसार, शुक्रवार को घर में घुसते ही कृष्ण ने मारपीट शुरू कर दी। उसका मोबाइल छीन लिया। रवीना ने बताया कि कृष्ण ने घर में रखी ज्वेलरी भी छीन ली। इसके बाद घर के बाहर आसपास के लोग भी इकट्ठा हो गए, जिसके कुछ देर बाद कृष्ण घर से चला गया।

नारनौल। वायरल वीडियो में हाथापाई करते हुए। फोटो: हरिभूमि

मां राजबाला का कहना है कि कृष्ण इससे पहले भी कई बार मारपीट कर चुका है। घर से निकालने की कोशिश कर चुका है। घटना के बाद हमने पुलिस को इसकी सूचना दी है। पुलिस मौके पर भी पहुंची। हमें उनसे सुरक्षा चाहिए। इस घटना में उसे और बेटी को चोट लगी हैं।

यह बताया कृष्ण ने

कृष्ण का कहना है कि बहन जो स्कूटी चलाती है, वह भी उसके नाम पर है। फैमिली आईडी में दर्ज नंबर भी उसके पास हैं। मोबाइल पर आए ओटीपी को बताने में भी परिवार संकोच करता है।

यह बोले थाना प्रभारी

सदर थाना प्रभारी धर्मवीर ने बताया कि दोनों पक्षों को थाने बुलाया गया है। मामला सुलझाने की कोशिश की जा रही है। बेटा जमीन और मकान की मांग कर रहा है। पूरे मामले की जांच की जा रही है। परिवार के शिकायत देने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

हरियाणा के खिलाड़ियों ने विश्व पटल पर गाड़ा जीत का झंडा, संसाधनों की कमी नहीं रहने देगी सरकार : गौरव

नारनौल के बड़कोदा-बड़गांव में 14 एकड़ में बनेगा अत्याधुनिक जिलास्तरीय स्टेडियम, खेल मंत्री ने किया साइट का निरीक्षण

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

हरियाणा के खेल एवं युवा मामले मंत्री गौरव गौतम ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार खेलों और खिलाड़ियों के सर्वांगीण विकास के लिए पूरी प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार खेलों को लगातार बढ़ावा दे रही हैं । खेल मंत्री शनिवार गांव बड़कोदा-बडगांव में प्रस्तावित खेल स्टेडियम की साइट का निरीक्षण करने के बाद लोगों से बातचीत कर रहे थे।

खेल मंत्री ने कहा कि खेल सुविधाओं को और अधिक बेहतरीन बनाने के लिए गांव बड़कोदा-बडगांव में लगभग 14 एकड़ भूमि पर एक भव्य जिला स्तरीय खेल स्टेडियम का निर्माण किया जाएगा खेल मंत्री ने कहा कि प्रदेश में खिलाड़ियों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की ढांचागत सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। आज प्रदेश के खिलाड़ी पूरी दुनिया में नाम रोशन कर रहे हैं। निरीक्षण के दौरान खेल मंत्री ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि 14 एकड़ में बनने वाले इस खेल स्टेडियम का निर्माण कार्य उच्च गुणवत्ता के साथ समयबद्ध तरीके से पूरा किया जाए। इस मौके पर पूर्व मंत्री व नारनौल के विधायक ओम प्रकाश यादव ने कहा कि खेल स्टेडियम का निर्माण होना क्षेत्र के युवाओं के सुनहरे भविष्य की नींव रखेगा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री की खेल नीति का ही परिणाम है कि आज ग्रामीण क्षेत्रों तक खेलों का ढांचा पहुंच रहा है। इस अवसर पर उनके साथ भाजपा के जिला अध्यक्ष डॉ. यतेंद्र राव तथा जिला खेल अधिकारी नरेंद्र कुंडू भी उपस्थित रहे।

निरीक्षण के दौरान खेल मंत्री ने स्टेडियम के ले-आउट और भविष्य में उपलब्ध होने वाली खेल विधाओं की विस्तृत समीक्षा की।

नारनौल। स्टेडियम की साइट का निरीक्षण करते खेल मंत्री गौरव गौतम।

इन सुविधाओं से लैस होगा जिला स्तरीय खेल स्टेडियम

हरियाणा सरकार द्वारा जिला नारनौल के गांव बड़कोदा-बडगांव में स्टेडियम के लिए खेल विभाग ने सुविधाओं का विस्तृत 'स्कोप ऑफ वर्क' तैयार कर मुख्य वास्तुकार को ड्राइंग बनाने के लिए भेज दिया है। इस आधुनिक स्टेडियम में खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं मिलेंगी। यहां 400 मीटर का सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक तैयार किया जाएगा, जिसके बीच में फुटबॉल ग्राउंड होगा। इसके अलावा, हॉकी प्रेमियों के लिए हॉकी एस्ट्रोटर्फ और क्रिकेट के लिए अलग से खेल मैदान का निर्माण होगा। इनडोर खेलों को बढ़ावा देने के लिए स्टेडियम परिसर में तीन कोर्ट वाला वुडन बैडमिंटन हॉल, एक मल्टीपरपज इंडोर हॉल, और वॉलीबॉल व बास्केटबॉल के लिए इंडोर ग्राउंड बनाए जाएंगे। मार्शल आर्ट्स और पारंपरिक खेलों के लिए कबड्डी, कुश्ती और जूडो के अलग-अलग हॉल की सुविधा दी जाएगी। साथ ही, शूटिंग रेंज, आर्चरी ग्राउंड, सिंथेटिक लॉन टेनिस कोर्ट और एक आधुनिक तैराकी तरणताल (स्विमिंग पूल) भी इस प्रोजेक्ट का हिस्सा हैं। खिलाड़ियों की सुविधा के लिए यहाँ लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग चेंजिंग रूम, बाथरूम और शौचालय बनाए जाएंगे। साथ ही, हर खेल के सामान के लिए विशेष स्टोर रूम और जिला खेल कार्यालय के लिए एक प्रशासनिक भवन का निर्माण भी किया जाएगा।

एसेट एलोकेशन, एसआईपी और लिक्विडिटी प्लानिंग से पाएं स्थिर रिटर्न, रिटर्न के पीछे भागने के बजाय अपनाएं संतुलित और अनुशासित निवेश रणनीति

उतार-चढ़ाव भरे बाजार में समझदारी से करें निवेश

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- इक्विटी, डेट और गोल्ड के सही संतुलन से बनाएं सुरक्षित और ग्रोथ-ओरिएंटेड पोर्टफोलियो
- सफल निवेश के लिए अपनाएं बैलेंस, डिसिप्लिन और सही एसेट एलोकेशन

नया वित्तीय वर्ष ऐसे समय में शुरू हो रहा है जब बाजार लिक्विडिटी-ड्रिवन तेजी के दौर से निकलकर एक अधिक चुनिंदा और उतार-चढ़ाव भरे फेज में प्रवेश कर चुका है। पिछले कुछ वर्षों में इक्विटी बाजार ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिए, लेकिन वित्त वर्ष 27 का परिदृश्य अलग नजर आ रहा है। वैश्विक अर्थव्यवस्था अभी भी असमान गति से बढ़ रही है, महंगाई में कमी आई है लेकिन यह पूरी तरह नियंत्रित नहीं हुई है, और ब्याज दरों में तेजी से गिरावट की संभावना भी कम है। ऐसे माहौल में भारतीय निवेशकों के सामने अवसर तो हैं, लेकिन सफलता के लिए रणनीति में बदलाव जरूरी है। यह समय अंधाधुंध रिटर्न के पीछे भागने का नहीं, बल्कि सोच-समझकर, संतुलित और अनुशासित निवेश करने का है।

> वित्त वर्ष 27 ऐसा वर्ष हो सकता है जहां बाजार निवेशकों की समझ और धैर्य की परीक्षा लेगा। यह समय आक्रामक या बिना योजना वाले निवेश का नहीं है। जो निवेशक संतुलन, अनुशासन और जोखिम प्रबंधन पर ध्यान देंगे, वही लंबी अवधि में सफल होंगे।

इस साल अपनाए जाने वाले 7 अहम निवेश मंत्र

1. अपने वित्तीय लक्ष्यों की दोबारा समीक्षा करें

अक्सर निवेशक एक बार लक्ष्य तय कर लेते हैं और फिर उसे बदलते नहीं, जबकि समय के साथ परिस्थितियां बदलती रहती हैं। आय, जिम्मेदारियां और बाजार की स्थिति इन सबका असर निवेश पर पड़ता है। अगर आपका कोई लक्ष्य 2–3 साल में पूरा होना है, तो ज्यादा इक्विटी निवेश जोखिम भरा हो सकता है। वहीं, लंबी अवधि के लक्ष्यों जैसे रिटायरमेंट या वेल्थ क्रिएशन के लिए इक्विटी अब भी उपयुक्त विकल्प है। इसलिए निवेश का ढांचा लक्ष्य की समयसीमा के अनुसार तय करना जरूरी है।

2. एसेट एलोकेशन को संतुलित रखें

आज के समय में सबसे बड़ा जोखिम बाजार का उतार-चढ़ाव नहीं, बल्कि एक ही एसेट क्लास में अत्यधिक निवेश है। कई पोर्टफोलियो अनजाने में इक्विटी-हैवी हो गए हैं। वित्त वर्ष 27 में संतुलन बेहद जरूरी है। इक्विटी के साथ-साथ डेट और गोल्ड को भी पोर्टफोलियो में शामिल करें। जहां इक्विटी ग्रोथ देती है, वहीं डेट स्थिरता प्रदान करता है और गोल्ड अनिश्चितता के समय सुरक्षा कवच का काम करता है। साल में कम से कम एक बार पोर्टफोलियो को रीबैलेंस करना जरूरी है।

3. सही मायनों में डाइवर्सिफिकेशन अपनाएं

कई निवेशक मानते हैं कि ज्यादा म्यूचुअल फंड रखना ही डाइवर्सिफिकेशन है, जबकि ऐसा नहीं है। अगर सभी फंड एक ही तरह के सेक्टर या मार्केट कैप में निवेश कर रहे हैं, तो जोखिम बना रहता है। बेहतर होगा कि पोर्टफोलियो में लार्ज कैप, फ्लेक्सी कैप, डेट और गोल्ड का संतुलित मिश्रण हो। इसके अलावा सीमित स्तर पर अंतरराष्ट्रीय निवेश भी जोड़ा जा सकता है, जिससे जोखिम और रिटर्न का संतुलन बेहतर होता है।

4. वोलाटिलिटी को अवसर के रूप में देखें

वित्त वर्ष 27 में बाजार में उतार-चढ़ाव बना रह सकता है। ऐसे में घबराने की बजाय इसे अवसर के रूप में देखना चाहिए। एसआईपी इस तरह के माहौल में बेहद प्रभावी साबित होती है, क्योंकि यह लागत को औसत करती है। इसके साथ ही, बाजार में गिरावट आने पर अतिरिक्त निवेश (स्टैगर्ड तरीके से) करना लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न दे सकता है। सबसे जरूरी है कि भावनाओं के बजाय अनुशासन के साथ निवेश जारी रखा जाए।

5. लिक्विडिटी को नजरअंदाज न करें

कई निवेशक अपनी अधिकांश राशि बाजार से जुड़े साधनों में लगा देते हैं और जरूरत पड़ने पर नुकसान में निवेश तोड़ने के लिए मजबूर हो जाते हैं। इससे बचने के लिए कम से कम 6 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड जरूर रखें। यह फंड न केवल आपको संकट में सुरक्षा देगा, बल्कि बाजार में अवसर आने पर अतिरिक्त निवेश की सुविधा भी देगा।

6. डेट निवेश की अहमियत समझें

तेजी के दौर में डेट निवेश को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है, लेकिन अस्थिर बाजार में इसकी भूमिका बढ़ जाती है। डेट इंस्ट्रूमेंट्स स्थिर और अनुमानित रिटर्न देते हैं, साथ ही पोर्टफोलियो के कुल जोखिम को कम करते हैं। खासकर शॉर्ट-टू-मिड टर्म लक्ष्यों के लिए डेट एक मजबूत विकल्प है। यह पोर्टफोलियो को संतुलन और स्थिरता प्रदान करता है।

7. फंड चयन से ज्यादा जरूरी है अनुशासन

निवेशक अक्सर "सबसे अच्छा फंड" ढूंढ़ने में समय लगाते हैं, लेकिन असल में लंबे समय में सफलता अनुशासन और निरंतरता से मिलती है। बार-बार फंड बदलना नुकसानदायक हो सकता है, क्योंकि इससे अक्सर निवेशक ऊंचे दाम पर खरीदते और गिरावट में बेचते हैं। बेहतर है कि कुछ अच्छे फंड चुनकर लंबे समय तक निवेशित रहें और समय-समय पर समीक्षा करते रहें।

अनुशासन ही सफलता की कुंजी

वित्त वर्ष 27 ऐसा वर्ष हो सकता है जहां बाजार निवेशकों की समझ और धैर्य की परीक्षा लेगा। यह समय आक्रामक या बिना योजना वाले निवेश का नहीं है। जो निवेशक संतुलन, अनुशासन और जोखिम प्रबंधन पर ध्यान देंगे, वही लंबी अवधि में सफल होंगे। बाजार को समय करने की कोशिश करने के बजाय ऐसा पोर्टफोलियो बनाना ज्यादा समझदारी है, जो हर परिस्थिति में टिक सके। अंततः, निवेश में सफलता किसी एक बड़े फैसले से नहीं, बल्कि छोटे-छोटे सही निर्णयों को लगातार लागू करने से मिलती है। समझदारी से निवेश करें और अपने वित्तीय भविष्य को मजबूत बनाएं।

गिरते बाजार में धैर्य ही सबसे बड़ा हथियार

सुझाव | **बिजनेस डेस्क**

शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव कोई नई बात नहीं है, लेकिन जब गिरावट तेज होती है तो निवेशकों का धैर्य डगमगाने लगता है। हाल के दिनों में वैश्विक स्तर पर बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव, खासकर पश्चिम एशिया में हालात और कच्चे तेल की कीमतों में उछाल ने बाजार को अस्थिर बना दिया है। ऐसे माहौल में कई निवेशक घबराकर अपने निवेश से बाहर निकलने या एसआईपी (सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) बंद करने का फैसला कर लेते हैं। हालांकि, जानकारों का कहना है कि इस तरह के फैसलों को निवेश के लिए नुकसानदेह मानती हैं। उनका स्पष्ट कहना है कि बाजार की गिरावट के समय घबराहट में लिया गया निर्णय अक्सर लंबी अवधि के रिटर्न को कमजोर कर देता है।

एसआईपी रोकना क्यों हो सकता है नुकसानदायक

गिरते बाजार में एसआईपी बंद करना निवेशकों की सबसे बड़ी भूल होती है। एसआईपी का मूल उद्देश्य ही बाजार की अस्थिरता का फायदा उठाना है। जब बाजार गिरता है, तो निवेशक कम कीमत पर अधिक यूनिट्स खरीद पाते हैं। यही प्रक्रिया "कॉस्ट एवरेजिंग" कहलाती है, जो लंबे समय में बेहतर रिटर्न देने में मदद करती है। यदि निवेशक गिरावट के समय एसआईपी रोक देते हैं, तो वे इस कॉस्ट एवरेजिंग के लाभ से वंचित हो जाते हैं। यही कारण है कि एक्सपर्ट्स हमेशा सलाह देते हैं कि एसआईपी को एक अनुशासित आदत की तरह जारी रखा जाए, न कि बाजार के मूड के हिसाब से चलाया जाए।

एकमुश्त निवेशकों के लिए एसटीपी का विकल्प

जो निवेशक एकमुश्त रकम निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए अदिति ने एसटीपी (सिस्टेमैटिक ट्रांसफर प्लान) को बेहतर विकल्प बताया है। एसटीपी के जरिए निवेशक अपनी बड़ी राशि को धीरे-धीरे इक्विटी में ट्रांसफर कर सकते हैं। इससे बाजार के उतार-चढ़ाव का जोखिम कम होता है और निवेश अधिक संतुलित तरीके से होता है। यह रणनीति खासतौर पर उन निवेशकों के लिए उपयोगी है जो बाजार के सही समय को लेकर असमंजस में रहते हैं।

जियोपॉलिटिकल तनाव का असर

मौजूदा गिरावट के पीछे प्रमुख कारण वैश्विक अनिश्चितता है। पश्चिम एशिया में तनाव और तेल की कीमतों में तेजी ने निवेशकों की भावनाओं को प्रभावित किया है। हालांकि, अदिति का मानना है कि इस तरह की गिरावट आमतौर पर अल्पकालिक होती है। जब तक ये घटनाएं वैश्विक व्यापार, सप्लाई चेन या ऊर्जा आपूर्ति को बड़े स्तर पर प्रभावित नहीं करतीं, तब तक इक्विटी बाजार का दीर्घकालिक ट्रेंड नहीं बदलता। बाजार फिलहाल वास्तविक कॉर्पोरेट कमाई के बजाय खबरों और अनिश्चितता पर प्रतिक्रिया दे रहा है, जो समय के साथ सामान्य हो जाती है।

फाइनेंशियल सेक्टर में अवसर

मौजूदा परिस्थितियों में अदिति कोठारी देसाई बैंकिंग और फाइनेंशियल सेक्टर को लेकर आशावादी नजर आती हैं। उनका कहना है कि प्राइवेट बैंक, इंश्योरेंस व हाउसिंग फाइनेंस कंपनियां इस समय आकर्षक वैल्युएशन पर उपलब्ध हैं। विशेष रूप से निफ्टी प्राइवेट बैंक इंडेक्स एक दशक के सबसे निचले वैल्युएशन के करीब ट्रेड कर रहा है। इसका मतलब है कि मजबूत व गुणवत्ता वाले शेयर अपेक्षाकृत सस्ते मिल रहे हैं। ऐसे समय में धैर्य रखने वाले निवेशकों के लिए सुनहरा अवसर बन सकता है।

अनुशासन व धैर्य ही सफलता

निवेश की दुनिया में सबसे बड़ा सबक यही है कि भावनाओं के बजाय रणनीति के आधार पर निर्णय लिए जाएं। बाजार का गिरना या चढ़ना एक चक्र का हिस्सा है। जो निवेशक इन उतार-चढ़ावों के दौरान भी अनुशासन बनाए रखते हैं, वही लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न हासिल करते हैं। अदिति का संदेश साफ है हेडलाइंस और शॉर्ट-टर्म मूवमेंट्स को देखकर घबराने की जरूरत नहीं है। बल्कि ऐसे समय में अपने निवेश प्लान पर टिके रहना ही समझदारी है।

लॉन्ग टर्म निवेशकों के लिए मौका

इतिहास गवाह है कि बाजार में हर बड़ी गिरावट के बाद रिकवरी भी आती है। जो निवेशक गिरावट के समय निवेश जारी रखते हैं, वे रिकवरी के समय सबसे अधिक लाभ कमाते हैं। इसलिए, मौजूदा बाजार की अस्थिरता को खतरे के बजाय अवसर के रूप में देखना चाहिए।

10,000 की एसआईपी या 10 लाख का लंपसम कौन देगा बड़ा रिटर्न

दुनिया में बाजार कभी सीधी रेखा में नहीं चलता, उतार-चढ़ाव, गिरावट, रिकवरी और अनिश्चितता हमेशा बनी रहती है

जानकारी | **बिजनेस डेस्क**

> *आज के समय में, जब वैश्विक और घरेलू कारकों के कारण बाजार में अस्थिरता बढ़ी हुई है, यह संतुलित रणनीति और भी प्रासंगिक हो जाती है। यह निवेशक को न केवल बेहतर रिटर्न की संभावना देती है, बल्कि मानसिक संतुलन भी बनाए रखने में मदद करती है। निवेश का उद्देश्य केवल अधिकतम रिटर्न कमाना नहीं, बल्कि ऐसे निर्णय लेना भी है, जिन्हें लंबे समय तक सहजता से निभाया जा सके।*

आज के अस्थिर और उतार-चढ़ाव भरे बाजार में म्यूचुअल फंड निवेशकों के सामने सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर एसआईपी बेहतर है या लंपसम निवेश। खासकर तब, जब अचानक आपके हाथ में 10 लाख रुपये की बड़ी राशि आ जाए चाहे वह बोनस हो, बचत हो या किसी निवेश का रिटर्न। एक तरफ एसआईपी का अनुशासित और अपेक्षाकृत सुरक्षित तरीका है, जिसमें बाजार के उतार-चढ़ाव का असर कम होता है, वहीं दूसरी ओर लंपसम निवेश है, जो सही समय पर किया जाए तो तेज कंपाउंडिंग के जरिए बड़ा रिटर्न दे सकता है। लेकिन जब बाजार गिरता है, पोर्टफोलियो लाल दिखता है और निवेशक घबराने लगते हैं, तब यह दुविधा और भी गहरी हो जाती है कि निवेश जारी रखें या रणनीति बदलें। ऐसे में 10 साल की अवधि में कौन-सा तरीका ज्यादा संपत्ति बनाता है। यही सवाल हर निवेशक के मन में उठता है।

पहली नजर में लंपसम निवेश ज्यादा आकर्षक लगता है। इसका कारण है कंपाउंडिंग की ताकत। जब पूरी राशि एक ही बार में निवेश हो जाती है, तो वह पहले दिन से ही बाजार में काम करना शुरू कर देती है। यदि हम 10 साल की अवधि और औसतन 12% सालाना रिटर्न मानें, तो 10 लाख का लंपसम निवेश लगभग 31 लाख रुपये तक पहुंच सकता है। इसके मुकाबले 10,000 की मासिक एसआईपी, जिसमें कुल निवेश 12 लाख रुपये होता है, लगभग 22.5 लाख रुपये का फंड तैयार करती है। इस सीधी तुलना में लंपसम स्पष्ट रूप से आगे दिखाई देता है।

निवेश केवल आंकड़ों का खेल नहीं

निवेश केवल आंकड़ों का खेल नहीं है। असल दुनिया में बाजार कभी सीधी रेखा में नहीं चलता। इसमें उतार-चढ़ाव, गिरावट, रिकवरी और अनिश्चितता हमेशा बनी रहती है। यही वह जगह है, जहां एसआईपी की अहमियत समझ में आती है। एसआईपी निवेशक को बाजार की टाइमिंग की चिंता से मुक्त करती है। वह हर महीने एक तय राशि निवेश करता है। चाहे बाजार ऊपर हो या नीचे। इसका सबसे बड़ा फायदा "रुपी कॉस्ट एवरेजिंग" के रूप में मिलता है, जहां निवेशक महंगे और सस्ते दोनों दामों पर यूनिट खरीदता है, जिससे उसकी औसत लागत संतुलित रहती है।

एसआईपी की ताकत और स्पष्ट

जब बाजार गिरता है, तब एसआईपी की ताकत और स्पष्ट हो जाती है। उस समय अधिकांश निवेशक घबराकर निवेश रोक देते हैं, लेकिन जो निवेशक एसआईपी जारी रखते हैं, वे कम कीमत पर ज्यादा यूनिट खरीदते हैं। यही यूनिट्स बाजार के संभलने पर बेहतर रिटर्न देती हैं। इसके विपरीत, लंपसम निवेश में यदि निवेश गलत समय पर यानी बाजार के उच्च स्तर पर किया गया हो, तो शुरुआती गिरावट निवेशक को मानसिक दबाव में ला सकती है। कई बार निवेशक घबराकर नुकसान में ही पैसा निकाल लेते हैं, जिससे दीर्घकालिक लाभ का अवसर खत्म हो जाता है।

सही उत्पाद चुनना जरूरी

यहां एक महत्वपूर्ण पहलू 'निवेशक का व्यवहार' है। निवेश में सफलता सही उत्पाद चुनने से नहीं, बल्कि सही व्यवहार बनाए रखने से मिलती है। बाजार की गिरावट, नकारात्मक खबरें और लाल होते पोर्टफोलियो निवेशकों के धैर्य की परीक्षा लेते हैं। एसआईपी एक अनुशासित ढांचा प्रदान करती है, जो निवेशक को नियमित बने रहने में मदद करता है। वहीं लंपसम निवेश में निर्णय का पूरा भार एक ही समय पर होता है, जो मानसिक रूप से अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि लंपसम निवेश गलत है। यदि बाजार का मूल्यांकन आकर्षक हो, निवेशक के पास लंबी अवधि का नजरिया हो और वह उतार-चढ़ाव सहने की क्षमता रखता हो, तो लंपसम रणनीति अत्यंत प्रभावी हो सकती है। जब बाजार लगातार ऊपर बढ़ रहा हो, लंपसम निवेश अधिक लाभ देता है क्योंकि पूरा पैसा शुरू से ही कंपाउंडिंग का लाभ उठा रहा होता है।

कोई एक सार्वभौमिक उत्तर नहीं

अंततः, एसआईपी और लंपसम में से कौन बेहतर है, इसका कोई एक सार्वभौमिक उत्तर नहीं है। यह पूरी तरह निवेशक की जोखिम लेने की क्षमता, निवेश अवधि और व्यक्तिगत सुविधा पर निर्भर करता है। महत्वपूर्ण यह है कि निवेशक अपनी रणनीति को समझे, बाजार की अस्थिरता से विचलित न हो और अनुशासन बनाए रखे।

15 लाख से ज्यादा सैलरी पर भी जीरो टैक्स का मौका

बिजनेस डेस्क

मिडिल क्लास के लिए टैक्स बचाना हमेशा से एक बड़ी चुनौती रहा है। हर साल बढ़ती सैलरी के साथ टैक्स का बोझ भी बढ़ता जाता है, जिससे हाथ में आने वाली आय सीमित रह जाती है। लेकिन वित्त वर्ष 2026-27 के नए टैक्स नियमों ने इस धारणा को बदलने का मौका दिया है। अब सही प्लानिंग और कुछ स्मार्ट विकल्पों के जरिए 15 लाख रुपये से अधिक सैलरी वाले लोग भी अपना टैक्स पूरी तरह शून्य कर सकते हैं। सरकार द्वारा लागू किए गए नए टैक्स रिजीम ने कई ऐसे प्रावधान दिए हैं, जो पहली नजर में छोटे लगते हैं, लेकिन मिलकर बड़ा फायदा देते हैं। खासतौर पर मील वाउचर्स, स्टैंडर्ड डिडक्शन और एम्प्लॉयर के जरिए किए गए निवेश इस गणित को पूरी तरह बदल देते हैं।

मील वाउचर्स बने गेम चेंजर

नए टैक्स नियमों में मील वाउचर्स को एक बड़ा फायदा माना जा रहा है। सेक्शन 115बीएसी के तहत प्रति भोजन 200 रुपये तक के वाउचर्स को टैक्स फ्री कर दिया है। अगर आपकी कंपनी आपको रोजाना लंच और डिनर के लिए 400 के वाउचर देती है, तो महीने के लगभग 22 कार्य दिवसों में यह राशि 8,800 हो जाती है। सालभर में यही रकम 1,05,600 रुपये तक पहुंच जाती है। यह राशि सीधे आपकी ग्रॉस सैलरी से घट जाती है, जिससे आपकी टैक्सेबल इनकम कम हो जाती है। यानी छोटे-छोटे खर्चों को स्मार्ट तरीके से बड़ा टैक्स बचा सकते हैं।

3.86 लाख की कुल छूट कैसे बनती है

- आपकी कुल सीटीसी 15.85 लाख रुपये है, तो आप चार प्रमुख तरीकों से अपनी टैक्सेबल इनकम को काफी हद तक घटा सकते हैं। पहले आता है स्टैंडर्ड डिडक्शन, जो नए टैक्स रिजीम में 75,000 तक दिया जा रहा है। यह फ्लैट छूट है, जिसे हर सैलरीड क्लेम कर सकता है।
- दूसरा बड़ा घटक है एम्प्लॉयर का पीएफ योगदान। आपकी बेसिक सैलरी का लगभग 12% हिस्सा कंपनी आपके प्रोविडेंट फंड में जमा करती है, जो टैक्स फ्री होता है। उदाहरण के तौर पर यह राशि करीब 95,100 रुपये तक हो सकती है।
- तीसरा और बेहद अहम हिस्सा है एनपीएस (नेशनल पेंशन सिस्टम)। सेक्शन 80सीसीडी(2) के तहत कंपनी द्वारा बेसिक सैलरी का 14% तक का योगदान टैक्स से मुक्त होता है। यह लगभग 1,10,950 रुपये तक की छूट दे सकता है।
- चौथा घटक है मील वाउचर्स, जिससे सालाना 1,05,600 रुपये की सीधी कटौती मिलती है। इन सभी को जोड़ने पर कुल टैक्स छूट 3,86,650 रुपये तक पहुंच जाती है। यही वह "स्मार्ट गणित" है, जो आपकी टैक्सेबल इनकम को काफी नीचे ले आता है।

12 लाख की सीमा और जीरो टैक्स का फायदा

नए टैक्स सिस्टम में एक महत्वपूर्ण सीमा 12 लाख रुपये की है। यदि आपकी टैक्सेबल इनकम 12 लाख रुपये या उससे कम रहती है, तो आपको रिबेट का फायदा मिलता है और आपका प्रभावी टैक्स शून्य हो जाता है। जब 15.85 लाख रुपये की सैलरी में से 3.86 लाख रुपये की छूट घटाई जाती है, तो आपकी नेट टैक्सेबल इनकम लगभग 11.98 लाख रुपये रह जाती है। यह 12 लाख रुपये की सीमा से नीचे है, इसलिए आपको कोई टैक्स नहीं देना पड़ता। यानी सही स्ट्रक्चरिंग और प्लानिंग के जरिए आप कानूनी रूप से अपनी टैक्स देनदारी को पूरी तरह खत्म कर सकते हैं।

वसीयत, नॉमिनेशन और इंश्योरेंस हैं, परिवार के भविष्य की मजबूत दीवारें

योजना | **बिजनेस डेस्क**

अक्सर जब लोग एस्टेट प्लानिंग शब्द सुनते हैं, तो उनके मन में यह धारणा बन जाती है कि यह केवल अमीर लोगों या रिटायरमेंट के करीब पहुंच चुके लोगों के लिए होती है। लेकिन हकीकत इससे बिल्कुल अलग है। एस्टेट प्लानिंग का मतलब है अपने वित्तीय संसाधनों और संपत्तियों को इस तरह व्यवस्थित करना कि किसी भी अनहोनी की स्थिति में आपके परिवार को आर्थिक और कानूनी परेशानियों का सामना न करना पड़े। खासकर 30 की उम्र वह पड़ाव होती है, जब जिम्मेदारियां तेजी से बढ़ती हैं और ऐसे में सही समय पर की गई प्लानिंग बेहद अहम हो जाती है।

30 की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते व्यक्ति का जीवन कई बदलावों से गुजरता है। करियर स्थिर होने लगता है, शादी हो जाती है, बच्चों की जिम्मेदारी जुड़ जाती है और कई बार घर या वाहन के लिए लोन भी लिया जाता है। ऐसे में आपकी फाइनेंशियल जिम्मेदारियां सिर्फ आपके तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि पूरे परिवार पर निर्भर हो जाती हैं। यदि किसी कारणवश आपके साथ कुछ अनहोनी हो जाए, तो परिवार के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो सकता है। एस्टेट प्लानिंग इस जोखिम को कम करती है और आपके परिवार को सुरक्षित भविष्य देने में मदद करती है।

30 की उम्र में एस्टेट प्लानिंग, आज की तैयारी, कल की सुरक्षा

वसीयत : स्पष्टता-सुरक्षा का आधार

एस्टेट प्लानिंग का सबसे महत्वपूर्ण और पहला कदम है वसीयत बनाना। वसीयत एक कानूनी दस्तावेज होता है, जिसमें यह स्पष्ट रूप से लिखा होता है कि आपकी संपत्ति, निवेश और अन्य एसेट्स किसे और कैसे मिलेंगे। अगर वसीयत नहीं बनाई गई है, तो आपकी संपत्ति का बंटवारा कानून के अनुसार होगा, जिसमें समय भी ज्यादा लग सकता है और परिवार को अनावश्यक कानूनी प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ सकता है। इससे विवाद की स्थिति भी पैदा हो सकती है। इसलिए जरूरी है कि आप समय रहते वसीयत बनाएं और जीवन में बदलाव (जैसे शादी, बच्चे, नई संपत्ति) आने पर उसे अपडेट भी करते रहें।

नॉमिनेशन : आसान एक्सेस की कुंजी

कई लोग बैंक अकाउंट, म्यूचुअल फंड, पीएफ, इंश्योरेंस पॉलिसी और अन्य निवेशों में नॉमिनेशन करना या अपडेट करना भूल जाते हैं। यह एक छोटी लेकिन बेहद महत्वपूर्ण चूक हो सकती है। सही नॉमिनेशन होने से जरूरत के समय आपके परिवार के सदस्य आसानी से पैसे तक पहुंच सकते हैं। इसके विपरीत, यदि नॉमिनेशन नहीं है या गलत है, तो क्लेम प्रक्रिया लंबी और जटिल हो सकती है। इसलिए यह जरूरी है कि आप समय-समय पर अपने सभी वित्तीय खातों और निवेशों में नॉमिनी की जानकारी अपडेट रखें। इससे परिवार को संकट के समय मानसिक और आर्थिक दोनों तरह की राहत मिलती है।

जीवन बीमाः आर्थिक सुरक्षा की ढाल

एस्टेट प्लानिंग का एक अहम हिस्सा है जीवन बीमा। यह सिर्फ टैक्स बचाने का जरिया नहीं, बल्कि आपके परिवार के लिए आर्थिक सुरक्षा कवच है। यदि परिवार की आय का मुख्य स्रोत आप हैं, तो आपके न रहने की स्थिति में लाइफ इंश्योरेंस पॉलिसी आपके परिवार को आर्थिक रूप से संभाल सकती है। इससे घर का खर्च, बच्चों की पढ़ाई, लोन की ईएमआई जैसी जिम्मेदारियां पूरी की जा सकती हैं। 30 की उम्र में बीमा लेने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि उस समय प्रीमियम कम होता है और आपको बेहतर कवर मिल सकता है। साथ ही, आप अपनी जरूरत और लक्ष्यों के अनुसार सही पॉलिसी चुन सकते हैं।

> **बढ़ती जिम्मेदारियों के बीच वित्तीय सुरक्षा का मजबूत आधार**
>
> **समय पर लिए गए फैसले परिवार को कानूनी और आर्थिक तनाव से बचाते हैं**

दस्तावेजों का सही प्रबंधन भी जरूरी

एस्टेट प्लानिंग केवल वसीयत और बीमा तक सीमित नहीं है। इसमें आपके सभी जरूरी दस्तावेजों का सही तरीके से रखरखाव भी शामिल है। जैसे बैंक डिटेल्स, इंश्योरेंस पॉलिसी, प्रॉपर्टी पेपर्स, लोन दस्तावेज, निवेश संबंधी जानकारी आदि। इन सभी को एक जगह व्यवस्थित रखना और परिवार के किसी विश्वसनीय सदस्य को इसकी जानकारी देना बहुत जरूरी है। इससे जरूरत के समय भागदौड़ और भ्रम की स्थिति नहीं बनती।

जल्दी प्लानिंग के फायदे

कई लोग एस्टेट प्लानिंग को टालते रहते हैं, यह सोचकर कि अभी उम्र कम है या अभी इसकी जरूरत नहीं है। लेकिन यही सबसे बड़ी गलती होती है। जल्दी शुरुआत करने से आप बेहतर और सोच-समझकर फैसले ले सकते हैं। साथ ही, समय के साथ अपनी प्लानिंग को अपडेट और बेहतर भी कर सकते हैं। यह एक बार का काम नहीं, बल्कि एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जो आपके जीवन के हर बदलाव के साथ विकसित होती रहती है।

उठाने का सबसे सही समय

एस्टेट प्लानिंग केवल संपत्ति के बंटवारे का माध्यम नहीं है, बल्कि यह आपकी जिम्मेदारी और दूरदर्शिता का प्रतीक है। वसीयत, सही नॉमिनेशन और लाइफ इंश्योरेंस के जरिए आप अपने परिवार को भविष्य की अनिश्चितताओं से सुरक्षित कर सकते हैं। 30 की उम्र इस दिशा में पहला मजबूत कदम उठाने का सबसे सही समय है। आज की गई सही प्लानिंग आपके परिवार को कल के संकट से बचा सकती है और उन्हें एक सुरक्षित व स्थिर जीवन दे सकती है।

खबर संक्षेप

श्रीकृष्ण-रूकमणी विवाह व रासलीला में उमड़े श्रद्धालु

महेंद्रगढ़। शहर की सब्जी मंडी के नजदीक स्थित कमला भवन धर्मशाला में चल रही सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा के छठे दिन साध्वी राधा रानी के द्वारा श्रीकृष्ण-रूकमणी विवाह एवं रासलीला का भावपूर्ण वर्णन किया गया, जिसमें श्रोताओं का भारी जनसैलाब उमड़ा। इस दौरान मास्टर अमरसिंह सोनी के निर्देशन में श्रीकृष्ण-रूकमणी विवाह की मनमोहक झांकियां भी पेश की गई। इस कार्यक्रम के यजमान ओमप्रकाश खुराना, सतीश गुढ़ा एवं भरत खुराना सपरिवार थे, जबकि प्रसाद की व्यवस्था डॉ. पूर्ण, सतीश गुढ़ा एवं आनंद सोनी के द्वारा करवाई गई। इस अवसर पर कथा प्रबंधक दर्शन खुराना, कविता खुराना, डाक्टर यशवंती, मास्टर, सतीश पाटोदिया, रवि शर्मा, अश्वनी पार्षद, मोहन जोशी आदि उपस्थित रहे।

बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास पर चर्चा

नारनौल। गांव छीलरो के आंगनबाड़ी केंद्र में शनिवार को पोषण पखवाड़े के अनुसार गतिविधि करवाई गई। जिसमें आंगनवाड़ी के बच्चों के माता पिता ने भाग लेते हुए बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास संबंधित अनेक जानकारियां हासिल की। आंगनवाड़ी सुपरवाइजर सुमनलता द्वारा तीन से छह साल के बच्चों के विकास में बच्चों के पिता के सहयोग व साथ पर चर्चा करते हुए बच्चों के पालन पोषण के लिए अकेली माता ही नहीं बल्कि पिता का उतना ही योगदान होना चाहिए।

श्री गौड़ ब्राह्मण सभा नारनौल ने धूमधाम से मनाया भगवान परशुराम जन्मोत्सव

समाज को परशुराम से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना चाहिए : खेल मंत्री

- मंत्री गौरव गौतम सहित सभी अतिथियों का पारंपरिक अंदाज में गाड़ी में बैठाकर स्वागत जुलूस के रूप में गौड़ सभा भवन तक लाया गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

श्री गौड़ ब्राह्मण सभा द्वारा शनिवार को भगवान परशुराम जन्मोत्सव कार्यक्रम बड़े ही धूमधाम और श्रद्धा के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सभा भवन में सुबह विधिवत हवन-पूजन के साथ किया गया, जिसके बाद प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। इस अवसर पर हरियाणा के खेल एवं युवा मामले राज्य मंत्री गौरव गौतम मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में नारनौल के विधायक ओमप्रकाश यादव, स्वामी आत्मानंद महाराज, पूर्व विधायक राधेश्याम शर्मा, विश्व ब्राह्मण कल्याण परिषद के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष सतीश शर्मा तथा भाजपा जिला अध्यक्ष यतेंद्र राव सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे। कार्यक्रम में पहुंचने पर मंत्री गौरव गौतम सहित सभी अतिथियों का पारंपरिक अंदाज में विंटेज गाड़ी में बैठाकर स्वागत जुलूस के रूप में गौड़ सभा भवन तक लाया गया। रास्ते में विप्र समाज के लोगों ने फूल-मालाओं से उनका जोरदार स्वागत किया। सभा स्थल पर गौड़ ब्राह्मण सभा के प्रधान राकेश मेहता एडवोकेट ने अतिथियों का पगड़ी और माल्यार्पण कर सम्मान किया।

मंच संचालन सुशील शर्मा द्वारा किया गया। इसके पश्चात अतिथियों ने भगवान परशुराम के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया और समाज की विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। अपने संबोधन में मंत्री गौरव गौतम ने विप्र समाज को समाज का मार्गदर्शक बताते हुए भगवान परशुराम के आदर्शों पर चलने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि भगवान परशुराम द्वारा दिए गए शास्त्र और शौर्य के संस्कार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जिससे समाज को उनसे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना चाहिए।

नारनौल। दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते खेल मंत्री गौरव गौतम। व कार्यक्रम में मंचासीन अतिथिगण। फोटो : हरिभूमि

'मिशन ओलंपिक 2036' को दी जा रही गति

सलिए उन्हें समाज से सकारात्मक कार्यों में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। खेलों के संदर्भ में उन्होंने बताया कि हरियाणा सरकार खिलाड़ियों को आधुनिक सुविधाएं, प्रोत्साहन राशि और उच्चस्तरीय प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में 'मिशन ओलंपिक 2036' को गति दी जा रही है। कार्यक्रम में अन्य वक्ताओं ने भी भगवान परशुराम के जीवन और उनके आदर्शों पर प्रकाश डालते हुए समाज को एकजुट रहने का संदेश दिया।

नारनौल। कार्यक्रम में भाग लेते गणमान्य लोग। फोटो : हरिभूमि

नारनौल। जलमहल का भ्रमण करते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

दा वेदांता इंटरनेशनल विद्यालय में बड़े उत्साह से मनाया विश्व धरोहर दिवस

- शैक्षणिक भ्रमण एवं रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

दा वेदांता इंटरनेशनल स्कूल में विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों के लिए एक शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया। इस दौरान विद्यार्थियों को ऐतिहासिक स्थलों जैसे जल महल, चोर गुंबद, इब्राहिम लोदी मकबरे का भ्रमण करवाया गया।

इस भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर एवं इतिहास से अवगत कराना था। शिक्षकों ने इन स्थलों के ऐतिहासिक महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी, जिससे विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हुआ। विद्यालय परिसर में भी विश्व धरोहर दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न रचनात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें निबंध लेखन, चार्ट बनाना तथा चित्र-संयोजन निर्माण शामिल थे। सभी विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन दिया। इसके साथ ही, इस दिन को और अधिक रोचक बनाने के लिए विद्यार्थियों को विभिन्न राज्यों के पारंपरिक व्यंजन टिफिन के रूप में लाने के लिए कहा गया।

इस गतिविधि के माध्यम से बच्चों को भारत के अलग-अलग प्रदेशों के भोजन और संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। सभी विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और विविध प्रकार के व्यंजनों का आनंद लिया। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के अध्यक्ष डॉ. विनोद कुमार यादव और प्राचार्य अनिल मुखीजाने सभी प्रतिभागियों की सराहना की तथा विजेताओं को पुरस्कृत किया। यह आयोजन विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।

महेंद्रगढ़। प्रतियोगिता में भाग लेते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित

महेंद्रगढ़। यदुवंशी स्कूल में शनिवार गतिविधि के अंतर्गत हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में विद्यालय के विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों ने भाग लिया और अपनी लेखन प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि बढ़ाना तथा उनकी रचनात्मक क्षमता को विकसित करना था। विद्यार्थियों ने शिक्षा का महत्व, पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल इंडिया जैसे विषयों पर प्रभावशाली निबंध प्रस्तुत किए। ग्रुप चेयरमैन एवं पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने कहा कि आज मुझे यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि आप सभी ने हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर भाग लिया। हिंदी हमारी मातृभाषा ही नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और पहचान का आधार है।

विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारना शिक्षकों का नैतिक दायित्व

नांगल चौधरी। सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में मेधावी प्रतिभा सम्मान रैली का आयोजन प्राचार्या वंदना यादव की अगुवाई में संपन्न हुआ। कार्यक्रम बतौर मुख्यातिथि मौजूद संस्था के चेयरमैन दयाराम यादव ने टॉपर विद्यार्थियों को पगड़ी पहनाकर अभिनंदन किया। इसके बाद अभिनंदन रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया है। प्राचार्या वंदना यादव ने बताया कि सीबीएसई बोर्ड के अंतर्गत 110 विद्यार्थियों ने 10 वीं कक्षा की परीक्षा में पंजीकृत रहे हैं। जिनमें 60 विद्यार्थियों ने मेरिट सूची में स्थान प्राप्त करके संस्था का गौरव बढ़ाया है। इतना ही नहीं 22 विद्यार्थियों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल कर अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। दत्ताल गांव की छात्रा पायल कुमारी पुत्री जयपाल ने 98 प्रतिशत अंक प्राप्त करके ब्लॉक टॉपर रही है। यशिका पुत्री अनिल कुमार ने 97.8 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। उन्होंने कहा कि सफलता में अनुशासन और संस्कारों की बड़ी भूमिका होती है। जिसके चलते स्कूल के विद्यार्थी बोर्ड कक्षाओं के साथ अन्य प्रतियोगिक परीक्षाओं में अव्वल दर्जा हांसिल कर रहे हैं।

नांगल चौधरी। समारोह में मेधावी प्रतिभाओं को सम्मानित करते चेयरमैन दयाराम यादव।

महेंद्रगढ़। टॉप 10 में शामिल छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

एमएससी बॉटनी यदुवंशी के पांच छात्र यूनिवर्सिटी की टॉप 10 में

महेंद्रगढ़। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर रेवाड़ी द्वारा एमएससी बॉटनी तीसरे सेमेस्टर का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया, जिसमें निशु पुत्री प्रदीप ने प्रथम, मोनिका पुत्री सुनील कुमार ने पांचवां, मोनिका पुत्री संजय ने सातवां, हिमांशु पुत्री बलवान ने नौंवा, मुस्कान पुत्र विनोद ने 10वां स्थान हासिल करके न केवल अपना नाम रोशन किया, बल्कि अपने माता-पिता के साथ-साथ यदुवंशी कॉलेज का भी नाम रोशन किया। संस्था चेयरमैन एवं पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने कहा कि वनस्पति विज्ञान में दो वर्षीय स्नातकोत्तर डिग्री जो पौधों उनके जीवन संरचना विकास इत्यादि का अध्ययन कराती है। यह अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। संस्था वाइस चेयरमैन एडवोकेट करण सिंह यादव, चेयरपर्सन संगीत यादव, सीईओ तनीष राव, ग्रुप डायरेक्टर विजय सिंह यादव, डॉ. प्रदीप यादव, कॉलेज प्राचार्य बबरूभान ने भी सभी विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्वल भविष्य की कामना की।

नारनौल। गहली गांव में लगन टीका समारोह के दौरान कार्यकर्ताओं ने बातचीत करते डॉ. अजय सिंह चौटाला। फोटो : हरिभूमि

जनहित मुद्दों से ध्यान भटका रही भाजपा सरकारः अजय

नारनौल। जननायक जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अजय सिंह चौटाला गहली गांव में अखिल भारतीय जाट सभा के अध्यक्ष अधिवक्ता विजय पाल के बेटे अधिवक्ता प्रशांत के लगन टीका समारोह में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने परिवार को शुभाशीष देते हुए नवदंपत्ति के उज्ज्वल भविष्य की कामना की और सामाजिक एकता का संदेश दिया। समारोह में पहुंचे डॉ. चौटाला का ग्रामीणों व पार्टी कार्यकर्ताओं ने गर्मजोशी से स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान अजय चौटाला ने लोगों से संवाद करते हुए हिसार मामले पर कहा कि पार्टी सरकार के फैसले का इंतजार कर रही है और यदि कार्रवाई नहीं हुई तो बड़ा निर्णय लिया जाएगा। साथ ही उन्होंने कांग्रेस पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता महंगाई, बेरोजगारी और किसानों की समस्याओं से जूझ रही है, जबकि सरकार इन मुद्दों से ध्यान भटका रही है। कांग्रेस पर हमला बोलते हुए उन्होंने कहा कि जिनके शासनकाल में भ्रष्टाचार और अव्यवस्था चरम पर थी, वे आज जनता को गुमराह करने का प्रयास कर रहे हैं।

सिटी वर्ल्ड स्कूल का सीबीएसई 10वीं परीक्षा का परिणाम रहा सराहनीय

कड़ी मेहनत व स्वाध्याय से सफलता अवश्य कदम चूमती है: विजय

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

सिटी वर्ल्ड सीनियर सेकेंडरी स्कूल पालड़ी पनिहारा के विद्यार्थियों ने सीबीएसई 10वीं के परीक्षा परिणाम में बेहतरीन सफलता प्राप्त कर अपने विद्यालय तथा अभिभावकों का नाम रोशन किया है। छात्र दीपांशु पुत्र राकेश शर्मा ने 92.4, मुस्कान पुत्री विजेंद्र 91.8, पलक शर्मा पुत्री मनोज कुमार तथा बिट्टू पुत्र अनिल कुमार ने संयुक्त रूप से 90.2 प्रतिशत अंक प्राप्त कर शानदार प्रदर्शन किया, वहीं विद्यालय का बोर्ड परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। परीक्षा परिणाम को देखकर विद्यार्थियों में खुशी का माहौल देखने को मिला। कक्षा दसवीं के विषय वार परिणाम में विद्यार्थियों ने गणित में 99, हिंदी 97, सामाजिक 96, विज्ञान 92 तथा अंग्रेजी में 86 अंक हासिल कर शानदार प्रदर्शन किया, वहीं विद्यालय के 65 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों ने अपना नाम मेधासूची में दर्ज करवाया। प्राचार्या ने खुशी जाहिर करते हुए बताया कि कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय को शानदार परिणाम दिए। एमडी देवेंद्र यादव ने कहा कि विद्यालय में विद्यार्थियों को आवश्यकतानुरूप शिक्षा प्रदान कर उन्हें उनके लक्ष्य तक पहुंचाया जाता है। निदेशिका स्नेह यादव ने इस सफलता का श्रेय विद्यार्थियों की लगन, एकाग्रता, अध्यापकों की कड़ी मेहनत व प्रबंधन समिति के उच्च मार्गदर्शन को दिया। चेयरमैन विजय सिंह यादव ने बताया कि दीपांशु, मुस्कान, पलक एवं बिट्टू ये सभी विद्यार्थी बहुत ही अनुशासनिक, व्यावहारिक एवं कर्मठ हैं। शिक्षा के साथ-साथ सह-शैक्षणिक गतिविधियों में भी इनका योगदान प्रशंसनीय रहा है।

महेंद्रगढ़। खुशी जाहिर करते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

आईजीयू परिणाम में आरपीएस का दबदबा

महेंद्रगढ़। आरपीएस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के सिविल इंजीनियरिंग विभाग ने इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय के घोषित परिणाम में शानदार प्रदर्शन कर टॉप-10 में सभी 10 स्थान हासिल कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। टॉप-10 में स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में डिंपल, अनिशा, रोहित, अंकित, नीरज, प्रियंका, अंकित कुमार, दीपिका, विनय एवं कुमुद शामिल हैं। इस उपलब्धि ने संस्थान को क्षेत्र में गौरव दिलाया है। इस सफलता पर संस्थान सीईओ मनीष, निदेशक डॉ. महेश यादव, रजिस्ट्रार डॉ. देवेंद्र यादव तथा डीन अकादमिक प्रो. राजेंद्र यादव ने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को बधाई दी। सिविल इंजीनियरिंग विभागाध्यक्ष रोहित यादव ने कहा कि यह परिणाम विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत और आरपीएस के शिक्षकों के समर्पण का परिणाम है और भविष्य में भी इसी प्रकार उत्कृष्ट प्रदर्शन जारी रहेगा। संस्थान प्रबंधन ने सभी मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित करने की घोषणा की है।

नीडी हेल्प ग्रुप ने किया 459वां कन्यादान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

सामाजिक संस्था नेकी की दीवार नीडी हेल्प ग्रुप ने मुहिम गरीब सुकन्या विवाह के अंतर्गत शनिवार दो सगी बहनों का कन्यादान किया। दोनों बहनें शहर से सटे गांव की रहने वाली है। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मोहरसिंह प्रजापति रहे। अध्यक्षता संस्था संस्थापक मनीष गोगिया ने की। वहीं कार्यक्रम संयोजक अनिल शर्मा एवं सुनील गोयल में संयुक्त रूप से की।

इस कन्यादान समारोह का आयोजन सालासर मेडिकल स्टोर पर किया गया। संस्था ने दोनों बहनों को कन्यादान में घरेलू समान जैसे कुकर, मिक्सी, ट्रे सेट, पंखा, प्रेस, हॉट केस, अटैची, लहंगा चुनरी, मिल्टन फ्रिज बोतल, मिल्टन बोतल, थर्मस, कप सेट, सूट साड़ियां, पेंट शर्ट, सफारी सूट, लेडीज पर्स ,सीनरी, दीवार घड़ी, रजाई, तकिया, बेड शीट, 51 बर्तन सेट, वाटर कैम्पर, लेडीज फ्रॉक सूट, नकद 501 का कन्यादान एवं अन्य समान उपहार स्वरूप बच्चियों को दिया गया। संस्था संस्थापक मनीष गोगिया ने बताया कि यह संस्था की तरफ से 459वां कन्यादान किया गया है। आगे भी इसी कड़ी को निरंतर निस्वार्थ भाव से चालू रखा जाएगा। इस मौके पर दवा विक्रेता संगठन के उपाध्यक्ष तुलसी गोयल, मोहर सिंह प्रजापति, सोनी गोयल, मनीष गोगिया, अनिल शर्मा, सुनील गोयल, डॉक्टर प्रदीप एडीओ, राकेश यादव सेका वाले, विपिन गोयल, शंकर लाल गोयल, राघव गोगिया एवं अन्य गणमान्य लोगों की गरिमामय उपस्थिति रही।

नारनौल। कन्यादान का सामान देते हुए ग्रुप सदस्य।

दिया गौरा प्रथम, पूजा ने पाया द्वितीय स्थान

नारनौल। राजकीय महाविद्यालय कृष्णनगर में नारी शक्ति बंधन अभियान के अंतर्गत विकसित भारत की पहचान नारी का हो सशक्त स्थान विषय पर स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉक्टर सुमन यादव ने की। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य महिलाओं के सशक्तिकरण सम्मान सुरक्षा और उनके अधिकारों के प्रति विद्यार्थियों एवं आमजन को जागरूक करना है। इस अवसर पर महाविद्यालय प्राचार्य डॉक्टर सुमन यादव ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए बताया कि आधुनिक युग में महिला शिक्षा, रक्षा, विज्ञान, राजनीति और व्यवसाय जैसे हर क्षेत्र में अपनी योग्यता का परचम लहरा रही है। जब नारी को निर्णय लेने की स्वतंत्रता और समान अवसर मिलते हैं तो देश की आर्थिक और सामाजिक स्थिति मजबूत होती हैं। एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी निर्मला यादव ने बताया कि घरेलू हिंसा दहेज प्रथा और नारी उत्पीड़न जैसी कुरीतियों का अंत ही नारी का सम्मान है। स्लोगन प्रतियोगिता में बीए तृतीय वर्ष की छात्रा दिया गोरा ने प्रथम स्थान बीए द्वितीय वर्ष की छात्रा पूजा ने द्वितीय स्थान और बीए द्वितीय वर्ष की छात्रा सारिका ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

दुष्यंत चौटाला के साथ सीआइए इंचार्ज की बदतमीजी दुर्भाग्यपूर्णः प्रमोद

नांगल चौधरी। हलका प्रधान एडवोकेट प्रमोद ताखर की अध्यक्षता में जेजेपी कार्यकर्ताओं की मीटिंग हुई। जिसमें हलका प्रभारी विनोद भील व प्रदेश सचिव हजारीलाल लंबोरा मुख्य रूप से मौजूद रहे हैं। उन्होंने पूर्व डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला के साथ सीआइए इंचार्ज हिसार द्वारा की गई बदतमीजी पर रोष जताया है। कहा कि पुलिस की कार्यशैली ने साबित कर दिया है की प्रदेश की कानून व्यवस्था चौपट हो चुकी है। उन्होंने कहा कि जिस तरह से एक पूर्व उपमुख्यमंत्री के साथ पुलिस द्वारा दुर्व्यवहार किया गया है, वह निंदनीय है तथा प्रदेश में बिगड़ती कानून व्यवस्था की गंभीर तस्वीर पेश करता है। जब एक जिम्मेदार और वरिष्ठ नेता के साथ इस तरह का व्यवहार हो सकता है, तो आम जनता के साथ पुलिस का रवैया कैसा होगा, इसका सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है। उन्होंने संबंधित पुलिस अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग करते हुए सरकार से इस मामले में तुरंत जवाब देने की अपील की है।

पारंपरिक सीमेंट-बेस्ड कंक्रीट कार्बन एमिशन का एक प्रमुख मिला

हाई-स्ट्रेंथ वन-पार्ट जियोपॉलिमर कंक्रीट का मिक्स डिजाइन के लिए पेटेंट प्राप्त

कंक्रीट को बनाने के लिए शून्य सीमेंट का प्रयोग किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय ने सिविल इंजीनियरिंग विभाग में विकसित एक नवाचारी कंक्रीट मिक्स डिजाइन के लिए पेटेंट प्राप्त कर एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक उपलब्धि हासिल की है। हाई-स्ट्रेंथ वन-पार्ट जियोपॉलिमर कंक्रीट का मिक्स डिजाइन यह पेटेंट 17 अप्रैल 2026 को भारत सरकार द्वारा दिव्या शर्मा, रणबीर सिंह, अर्शदीप सिंह एवं कनिष कपूर को प्रदान किया गया। विश्वविद्यालय की प्रथम महिला प्रो. सुनीता श्रीवास्तव भी उपस्थित रहे। यह शोध कार्य पीएचडी शोधार्थी दिव्या शर्मा द्वारा सिविल इंजीनियरिंग विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. रणबीर सिंह के सुपरविजन में किया गया। यह आविष्कार पारंपरिक कंक्रीट के ऑल्टरनेटिव के रूप में हाई-स्ट्रेंथ, ड्यूरेबल और इको-फ्रेंडली मैटेरियल के विकास पर केंद्रित है। इस कंक्रीट को बनाने के लिए शून्य सीमेंट का प्रयोग किया गया है, जो बिना सीमेंट के भी 70 एमपीए की कम्प्रेसिव स्ट्रेंथ प्रदान करता है। कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने शोध दल को बधाई देते हुए इनोवेशन एवं सस्टेनेबल इंजीनियरिंग प्रैक्टिसेज में उनके योगदान की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के डेवलपमेंट्स फ्यूचर-रेडी इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। डॉ. रणबीर सिंह ने बताया कि यह टेक्नोलॉजी संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसजीडीएस 2030) के अनुरूप है। उन्होंने उल्लेख किया कि पारंपरिक सीमेंट-बेस्ड कंक्रीट कार्बन एमिशन का एक प्रमुख स्त्रोत है, जबकि वन-पार्ट जियोपॉलिमर कंक्रीट इंडस्ट्रियल बाय-प्रोडक्ट्स का उपयोग करता है, जिससे ऑर्डिनरी पोर्टलैंड सीमेंट पर निर्भरता कम होती है और सस्टेनेबल कंस्ट्रक्शन को बढ़ावा मिलता है। यह पेटेंट टेक्नोलॉजी प्रैक्टिकल एप्लिकेशन्स में जियोपॉलिमर कंक्रीट के उपयोग को तेज करने की अपेक्षा रखती है और सिविल इंजीनियरिंग तथा एडवांस्ड कंस्ट्रक्शन मैटेरियल्स के क्षेत्र में विश्वविद्यालय की रिसर्च एक्सीलेंस को और सुदृढ़ करेगी। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. भास्कर दास, डॉ. नीरज कर्ण सिंह उपस्थित रहे।

महेंद्रगढ़। कुलपति के साथ शोधकर्ता। फोटो : हरिभूमि

बधाई प्रेषित की

शोधकर्ता दल ने पेटेंट का प्रमाण पत्र विश्वविद्यालय के कुलपति को सौंपा। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रथम महिला प्रो. सुनीता श्रीवास्तव ने सभी को बधाई प्रेषित की।

प्रदेश के 57,78955 छात्रों में से 47,17,902 की अपार आईडी तैयार, 516534 आवेदन प्रक्रिया में और 37438 मामलों में तकनीकी या अन्य कारणों से आईडी तैयार नहीं

अपार आईडी अभियान तेज: हर माह 9-10 को 'मेगा अपार दिवस', 81 फीसदी छात्रों की आईडी तैयार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

प्रदेश में विद्यार्थियों की डिजिटल शैक्षणिक पहचान सुनिश्चित करने की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद (एचएसएसपीपी) ने अपार आईडी निर्माण अभियान को तेज कर दिया है। परिषद ने प्रदेश के सभी जिला शिक्षा अधिकारियों, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारियों और जिला परियोजना समन्वयकों को निर्देश जारी कर स्पष्ट किया है कि छात्रों की ऑटोमेटेड परमानेंट एकेडमिक अकाउंट रजिस्ट्री (अपार) आई का शत-प्रतिशत निर्माण और सत्यापन प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाए। जारी निर्देशों के अनुसार इस अभियान को गति देने के लिए हर माह की नौ और 10 तारीख को "मेगा अपार दिवस" के रूप में मनाया जाएगा। इन विशेष दिनों में स्कूल स्तर पर लंबित मामलों को निपटाने, सत्यापन प्रक्रिया को पूरा करने और अभिभावकों की सहमति सुनिश्चित करने पर विशेष जोर रहेगा।

क्या है अपार आईडी

आपार आईडी छात्रों की एक यूनिक डिजिटल पहचान है। यह छात्र का स्थायी शैक्षणिक खाता होता है, जिसमें उसकी पढ़ाई से जुड़ी जानकारी रहती है। इसमें मार्कशीट, प्रमाण पत्र और उपलब्धियां सुरक्षित रूप से दर्ज होती हैं। स्कूल या कॉलेज बदलने पर भी छात्र का रिकॉर्ड नहीं खोता। यह फर्जी दस्तावेजों पर रोक लगाने और वेरिफिकेशन आसान बनाने में मदद करता है। अपार आईडी को आमतौर पर आधार से जोड़ा जाता है, जिससे पहचान सटीक रहती है।

अपार आईडी से वंचित न रहें

शिक्षा मंत्रालय के दिशा-निर्देशों के तहत कार्य को व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ाने के लिए छात्रों को दो श्रेणियों में बांटा गया है। पहले वे जिनके पास आधार कार्ड है लेकिन अपार आईडी नहीं बनी है, और दूसरे वे जिनके पास आधार कार्ड भी उपलब्ध नहीं है। इसी आधार पर राज्य, जिला और स्कूल स्तर पर डेटा का पृथक्करण कर कार्य को गति दी जा रही है। इस बीच, उड़ीसा उच्च न्यायालय के 12 दिसंबर 2025 के आदेश के अनुपालन में अपार सहमति फॉर्म में भी महत्वपूर्ण संशोधन किया गया है। अब अभिभावकों को स्पष्ट रूप से सहमति देने या असहमति का विकल्प दिया गया है, जिससे प्रक्रिया अधिक पारदर्शी और संवेदनशील बन सके। संशोधित फॉर्म हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराए गए हैं।

37 हजार 438 आईडी तकनीकी या अन्य कारण से अटकी

आंकड़ों पर नजर डालें तो हरियाणा इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। प्रदेश के कुल 57,78,955 छात्रों में से 47,17,902 (81.64 प्रतिशत) की अपार आईडी तैयार की जा चुकी है। जबकि 5,16,534 आवेदन प्रक्रिया में हैं और 37,438 मामलों में तकनीकी या अन्य कारणों से आईडी निर्माण नहीं हो सका है। परिषद ने जिला अधिकारियों को निर्देशित किया है कि वे संशोधित सहमति फॉर्म को तुरंत स्कूलों तक पहुंचाएं और लंबित छात्रों की आईडी बनाने के लिए विशेष अभियान चलाएं। "मेगा अपार दिवस" को जनभागीदारी से जोड़ते हुए इसे एक व्यापक जन-अभियान का रूप देने पर भी जोर दिया गया है। विशेषज्ञों के अनुसार अपार आईडी प्रणाली शिक्षा क्षेत्र में डिजिटल पारदर्शिता, डेटा सुरक्षा और छात्र की सतत शैक्षणिक पहचान सुनिश्चित करने की दिशा में एक क्रांतिकारी पहल साबित हो सकती है।

भूमि परीक्षण विभाग किसानों को दिखा रहा वैज्ञानिक खेती की राह

मिट्टी-पानी की मुफ्त जांच से बदल रही 'खेती की तस्वीर'

हर खेत स्वस्थ खेत योजना से किसानों को मिल रहा फायदा बढ़ेगी पैदावार

जांच रिपोर्ट के आधार पर कृषि विशेषज्ञों की सलाह लेकर मिट्टी का कर सकते हैं उपचार

राजकुमार ▶▶| नारनौल

हरियाणा सरकार 'हर खेत स्वस्थ खेत' योजना के तहत किसानों को मिट्टी और पानी की निःशुल्क जांच की सुविधा दे रही है। इस पहल का उद्देश्य किसानों को उनकी जमीन और पानी की गुणवत्ता की सही जानकारी देकर बेहतर फसल उत्पादन के लिए मार्गदर्शन करना है। विभाग के विशेषज्ञ कर्मचारियों द्वारा खेतों से किसान द्वारा लिए गए सैंपलों की मशीनों द्वारा जांच की जाती है और उसकी रिपोर्ट बनाकर किसान को दी जाती है, जिसे वे कृषि विशेषज्ञों, कृषि विभाग के एसडीओ या एडीओ को दिखाकर उनकी सलाह अनुसार आवश्यक सामग्री प्रयोग करने से मिट्टी एवं पानी की गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं। इससे किसान को कम लागत में अधिक उत्पादन का फायदा मिल सकता है।

उल्लेखनीय है कि किसान खेती को अधिक उपजाऊ और लाभकारी बनाने के लिए फसली सीजन अनुसार यानि रबी एवं खरीफ की बिजाई से पहले मिट्टी का उपचार करने के उद्देश्य से खेत की मिट्टी की जांच कर सकते हैं और फिर जांच रिपोर्ट के आधार पर कृषि विशेषज्ञों की सलाह लेकर मिट्टी का उपचार कर सकते हैं, जिससे कृषि लागत कम एवं उत्पादन बढ़ सके। इस मकसद को पूरा करने में हरियाणा सरकार की 'हर खेत स्वस्थ खेत' योजना असर दिखा रही है।

भूमि परीक्षण विभाग द्वारा मिट्टी और पानी की निःशुल्क जांच कर किसानों को उनके खेत की वास्तविक स्थिति बताई जा रही है, जिससे वे सही फसल और उर्वरक का चयन कर सकें।

कहां करें सैंपल जमा?

नारनौल बस स्टैंड के पास रेवाड़ी रोड स्थित जिला पुस्तकालय के बगल में भूमि परीक्षण लैब में किसान अपने सैंपल जमा करवा सकते हैं। जहां जांच का कोई पैसा नहीं लिया जाता है।

क्या है फायदा?

मिट्टी और पानी की जांच से किसान सही खाद, उर्वरक और फसल का चयन कर सकते हैं, जिससे लागत कम और उत्पादन अधिक होता है। इससे किसान को आर्थिक लाभ भी पहुंचेगा।

नारनौल। किसान द्वारा लाई गई मिट्टी को सैंपल के लिए तैयार करते हुए तथा आईसीपी मशीन पर मिट्टी परीक्षण करते हुए। *फोटो : हरिभूमि*

हजारों सैंपलों की जांच, लक्ष्य के करीब विभाग

सरकार द्वारा वर्ष 2023 में 10,600 सैंपलों का लक्ष्य निर्धारित किया गया था, जिसे विभाग ने समय पर पूरा कर लिया। सत्र 2025–26 में 49 हजार सैंपलों का लक्ष्य मिला, जिसमें से करीब 42 हजार की जांच पूरी हो चुकी है और शेष 7 हजार सैंपलों की जांच जल्द पूरी करने के प्रयास जारी हैं। इसके अलावा, 825 किसानों ने बिना योजना के सीधे सैंपल जमा करवाए, जिनकी जांच कर रिपोर्ट जारी की जा चुकी है।

आधुनिक मशीन से तेज और सटीक जांच

भूमि परीक्षण लैब सुपरवाइज मधसूदन के अनुसार भूमि परीक्षण विभाग के पास अत्याधुनिक कंप्यूटराइज्ड इंडक्टिव कपल्ड प्लाज्मा (आईसीपी) मशीन उपलब्ध है, जो 21 फरवरी 2023 से लगातार कार्यरत है। इस मशीन से प्रतिदिन दो शिफ्टों में लगभग 500 सैंपलों की जांच संभव है और अब तक करीब 1.5 लाख सैंपलों की जांच की जा चुकी है।

जिले में 95 प्रतिशत पानी कृषि योग्य

परीक्षण अधिकारियों के अनुसार जिले में लगभग 95 प्रतिशत भूजल कृषि योग्य है। खारे पानी को फसलों के लिए हानिकारक माना जाता है, लेकिन नहरों में जलापूर्ति बढ़ने से भूजल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है, जिससे किसानों को बेहतर सिंचाई सुविधा मिल रही है।

सही सैंपलिंग से मिलती है सटीक रिपोर्ट

मिट्टी की जांच के लिए किसानों को अपने खेत के चारों कोनों से करीब दस फुट अंदर और छह इंच गहराई तक अंग्रेजी के अक्षर 'V' आकार में खुदाई कर मिट्टी लेनी होती है। इन सैंपलों को अच्छी तरह मिलाकर सुखाने के बाद करीब आधा किलो मिट्टी लैब में जमा करवाई जाती है। ध्यान रहे कि पेड़ के नीचे या गड्ढे वाली जगह से सैंपल न लें। वहीं पानी के सैंपल के लिए आधा घंटा मोटर चलाने के बाद साफ, बिना गंध वाली बोतल में आधा लीटर पानी भरकर लाना होता है। पानी की रिपोर्ट तीन दिन में और मिट्टी की रिपोर्ट लगभग एक सप्ताह में किसानों को व्हाट्सएप के माध्यम से भेज दी जाती है।

यह कहते हैं अधिकारी

किसानों के लिए मिट्टी और पानी की जांच पूरी तरह नि:शुल्क की जा रही है। आधुनिक आईसीपी मशीन के माध्यम से प्रतिदिन बड़ी संख्या में सैंपलों की जांच संभव हो रही है और अब तक लगभग डेढ़ लाख सैंपलों की जांच की जा चुकी है। उन्होंने किसानों से अपील की कि वे अपनी जमीन और पानी की नियमित जांच करवाकर वैज्ञानिक तरीके से खेती करें, ताकि उत्पादन बढ़े और लागत में कमी आए।

–डॉ. पारस, भूमि परीक्षण अधिकारी, नारनौल।

खबर संक्षेप

सब इंस्पेक्टर ने बेटी का घोड़ी पर निकाला बनवारा

नारनौल। हुडा सेक्टर एक में बेटी की शादी से पूर्व परिजनों ने उसका धूमधाम से घोड़ी पर बैठाकर बनवारा निकाला। रविंद्र सिंह यादव एवं उनकी पत्नी नीतू यादव ने समाज में व्याप्त लड़का–लड़की के भेदभाव को दूर करते हुए अपनी बीएससी/एमएससी पास बेटी मेघा का बनवारा घोड़ी पर बैठाकर निकालने का निर्णय लिया। परिवार के इस कदम को ग्रामीण एवं समाज ने हृदय से प्रशंसा की। बेटी मेघा के पिता सब इंस्पेक्टर रविंद्र सिंह यादव शहर थाने में पोस्टेड हैं, माता श्रीमती नीतू यादव सरकारी अध्यापिका हैं। लड़की के पिता रविंद्र सिंह यादव ने बताया उनके लिए बेटा–बेटी में कोई अंतर नहीं है। इसलिए उन्होंने बेटी के बनवारे को वही सम्मान दिया, जो बेटों को दिया जाता है। इसका उद्देश्य समाज को यह संदेश देना था कि बेटियों को भी हर खुशी और अधिकार बराबर है। डॉ. वीरेंद्र कुमार शास्त्री ने कहा कि ऐसे ही माता-पिता समाज का उत्थान कर सकते हैं, जिनकी सोच एवं संस्कार बहुत प्रबल होते हैं।

दौंगड़ा स्कूल में हुआ प्रवेशोत्सव और प्रतिभा सम्मान समारोह

नारनौल। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दौंगड़ा अहीर में सत्र 2026–27 के लिए प्रवेशोत्सव एवं प्रतिभा सम्मान का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया गया। अध्यक्षता प्राचार्य विनोद कुमार यादव ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मार्केट कमेटी अटेली के चेयरमैन दिनेश जेलदार रहे। अध्यक्षता वरिष्ठ प्राचार्य सुनील खुडानिया ने की। चेयरमैन ने नवप्रवेशी छात्रों का फूल मालाओं से स्वागत किया तथा अभिभावकों से सरकारी विद्यालयों में बच्चों को प्रवेश दिलाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में पंकज कुमार एवं गुलशन कुमार उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रतिभाशाली छात्रों का सम्मान करते हुए पूर्व प्राचार्य अमरसिंह निम्होरिया, शेरसिंह राठी तथा रावमावि मुंडिया खेड़ा के प्राचार्य छोटेलाल ने सरकारी विद्यालयों की बदलती तस्वीर पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में बाल विवाह उन्मूलन तथा नशा मुक्ति का आह्वान करती लघु नाटिका का मंचन करते हुए छात्रों ने समाज के लोगों को शपथ दिलाई। मंच संचालन प्रवक्ता नीरज शर्मा, सुनीता यादव तथा अशोक कुमार ने किया। अंत में प्राचार्य विनोद कुमार यादव ने अतिथिगणों का धन्यवाद प्रेषित किया। कार्यक्रम में समस्त स्टाफ सदस्य देववृत, पवन कुमार, सुरेंद्र कुमार, नरेंद्र कुमार, अजय कुमार, महिपाल, रामगोपाल, डीपीई कर्णसिंह, रेणु, राजकौर, एबीआरसी कविता चिनानिया, मीना, मंजू, कैलाश कुमारी, लक्ष्मी, रूपेश बाबूजी, विक्रम, धनसुख आदि मौजूद रहे।

पोषण पखवाड़ा के अंतर्गत आयुष्मान आरोग्य शिविर लगाया

महेंद्रगढ़। आयुष्मान आरोग्य मंदिर निंबी में पोषण पखवाड़ा के अंतर्गत एक स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया। यह शिविर हरियाणा सरकार एवं जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. शशि बाला के निर्देशन में लगाया गया। शिविर में डॉ. सुमन द्वारा गर्भवती महिलाओं एवं किशोरियों को पोषण संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि आजकल बच्चे अत्यधिक मात्रा में कोल्ड ड्रिंक का सेवन कर रहे हैं, जिसकी जगह आम पन्ना, चिया सीड पानी, गोंद कतीरा, सौंफ का पानी जैसे प्राकृतिक पेय पदार्थ अपनाने चाहिए, जो शरीर में पानी की पूर्ति बनाए रखते हैं तथा डिहाइड्रेशन और लू से बचाव करते हैं। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि बच्चों में नमकीन व पैकेट फूड खाने की आदत बढ़ रही है, जबकि उनकी जगह पोषण से भरपूर घरेलू विकल्प जैसे ड्राई रोस्टेड पोहा, मखाना, भुने हुए चने, कढ़ी पत्ते, चावल की खिल (लाजा) में हल्दी-नमक मिलाकर सेवन किया जा सकता है। गर्भवती महिलाओं को मासानुसार परिचर्या नौ माह में आहार-विहार के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

आज मनाया जाएगा अंबेडकर-फुले का जन्मोत्सव

मंडी अटेली। डॉ. भीमराव अंबेडकर एवं ज्योतिबा फुले के संयुक्त जन्मोत्सव 19 अप्रैल अटेली क्षेत्र के गांव बजाड़ में अंबेडकर कॉलोनी में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। जानकारी देते हुए अश्वनी बौद्ध ने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में शिक्षा,समानता और जागरूकता का संदेश फैलाना है। यह कार्यक्रम आज सायं सात बजे से शुरू होगा, जिसमें विचार संगोष्ठी और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा, जिसमें शिक्षित बनो संगठित रहो संघर्ष करो के संदेश के साथ समाज को जागरूक करने पर विशेष जोर रहेगा।

लूजोता गांव के पास मृत लकड़बग्घा मिलने से सनसनी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नांगल चौधरी

निजामपुर रोड पर लूजोता गांव के पास एक लकड़बग्घा मृत अवस्था में मिलने से इलाके में भय का माहौल बना हुआ है। सूचना पाकर वाइड लाइफ विभाग की टीम मौके पर पहुंची तथा मृत जानवर का निरीक्षण किया। गले पर घाव मिलने से सड़क दुर्घटना में मौत होने की आशंका जताई गई है।

जानकारी के अनुसार सुबह राहगीरों को सड़क से थोड़ी दूरी तक अजीब नस्ल का जानवर पड़ा दिखाई दिया। नजदीक जाने पर मृत जानवर की पुष्टि हुई लेकिन शिनाख्त नहीं हो पाई। इसके बाद लोगों ने फोरेस्ट व वाइड लाइफ

विभाग में घटना की शिकायत दर्ज कराई। घटना स्थल पर पहुंचे जीव जंतु विभाग के निरीक्षक चरण सिंह ने आशंका जताई की लकड़बग्घा सड़क पार करते समय किसी अज्ञात वाहन की चपेट में आ गया होगा, जिससे उसकी मौत हो गई। हालांकि कुछ ग्रामीणों ने जानवर किसी बीमारी या जहरीले पदार्थ खाने की आशंका जताई है।

गेहूं की खरीद को लेकर किसानों में असंतोष

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कनीना

कनीना की नई अनाज मंडी चेलावास में गेहूं की खरीद को लेकर किसानों में असंतोष बढ़ता जा रहा है। व्यापारियों द्वारा प्रति क्विंटल आधा किलोग्राम गेहूं की कटौती किए जाने से किसानों की लॉबी तैयार होती जा रही है और वे इस मुद्दे पर अपनी आवाज उठाने की तैयारी कर रहे हैं। किसानों का आरोप है कि यह कटौती अनुचित है और उनकी मेहनत की उपज का नुकसान किया जा रहा है। किसानों की बढ़ती नाराजगी को देखते हुए आने वाले दिनों में यह मुद्दा और गंभीर हो सकता है। यदि प्रशासन और व्यापारियों के बीच कोई समाधान नहीं निकाला गया, तो मंडी में विरोध की स्थिति बन सकती है। दूसरी ओर, मार्केट कमेटी इस कटौती को नजरअंदाज करती नजर आ रही है। कमेटी का कहना है कि गेहूं में नमी की मात्रा और साफ-सफाई के मानकों को ध्यान में रखते हुए यह कटौती की जा रही है। हालांकि किसानों का तर्क है कि खरीद एजेंसी खाद्य एवं आपूर्ति विभाग विभाग की ओर से इस आधार पर इतनी कटौती उचित नहीं है और इसकी पारदर्शिता पर सवाल उठ रहे हैं।

क्या कहते हैं सचिव

मार्केट कमेटी के सचिव अजीत सिंह ने जानकारी दी कि गेहूं में नमी की मात्रा अधिक होने तथा साफ-सफाई न होने के चलते गेहूं की घटती हुई होगी। सफाई के लिए मंडी में झारने लगे हुए हैं। मौसम की खराबी के कारण रविवार को मंडी में गेहूं की खरीद बंद रहेगी। इस दौरान केवल उठान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि मौसम साफ होने के बाद ही खरीद प्रक्रिया दोबारा शुरू की जाएगी।

व्यापारी कटौती नहीं कर सकते

इस बारे में मार्केटिंग बोर्ड के मुख्य प्रशासक मुकेश आहुजा ने बताया कि गेहूं खरीद करते समय नियमानुसार व्यापारियों द्वारा किसी प्रकार की कटौती नहीं काटी जा सकती। यदि कनीना अनाज मंडी में खरीद करते समय गेहूं की कटौती काटी जा रही है तो इसकी तत्परता से जांच कराई जाएगी और दोषी पाए जाने वाले अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

महिला कॉलेज में निकाली पोषण जागरूकता रैली

नारनौल। राजकीय महिला महाविद्यालय में महिला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में 8वें पोषण पखवाड़े के अवसर पर एक जागरूकता रैली का आयोजन किया। प्राचार्य डॉ आरपी सिंह ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। इस अवसर पर छात्राओं को संबोधित करते हुए प्राचार्य ने कहा कि सरकार द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान का मुख्य उद्धेश्य छात्राओं और आमजन को बेहतर पोषण और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना है। उन्होंने स्वस्थ शरीर के लिए संतुलित आहार की उपयोगिता पर बल दिया। रैली में छात्राओं ने विभिन्न स्लोगन और संदेशों के माध्यम से संतुलित आहार, स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य किया। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. ममता शर्मा ने छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि पोषण केवल भोजन करने तक सीमित नहीं है, बल्कि सही समय पर संतुलित और पोषक तत्वों से भरपूर आहार लेना अनिवार्य है। छात्राओं को स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहकर समाज में स्वच्छता और पोषण का दूत बनना चाहिए। मौके पर डॉ. मुकेश यादव, डॉ. गीता यादव एवं डॉ. पवन यादव भी उपस्थित रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड्डा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डेंटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेंद्रगढ़।
नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरूण कलर लैब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल
फोन : 8295738500, 9253681005

तापमान | गर्मी के मौसम को देखते हुए जिला प्रशासन ने जारी की स्वास्थ्य एडवाइजरी

एडवाइजरी : दोपहर 12 बजे से शाम चार बजे के बीच बाहर जाने से करें परहेज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

दक्षिण हरियाणा में लगातार बढ़ रहे तापमान को देखते हुए जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग पूरी तरह सतर्क हो गया है। उपायुक्त अनुपमा अंजलि ने जिले के नागरिकों से आह्वान किया है कि वे इस तपती गर्मी और लू के थपेड़ों से खुद को सुरक्षित रखने के लिए विशेष सावधानी बरतें। उन्होंने कहा कि बढ़ता पारा स्वास्थ्य के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है, ऐसे में जागरूकता ही सबसे बड़ा बचाव है। उपायुक्त ने नागरिकों से अपील की है कि वे दोपहर के समय बेवजह घरों से बाहर न निकलें और स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पूरी निष्ठा से पालन करें ताकि हीट वेव के दुष्प्रभावों से बचा जा सके।

सिविल सर्जन डॉ. अशोक कुमार ने इस संबंध में विस्तृत जानकारी साझा करते हुए बताया कि इन दिनों सरकारी और निजी अस्पतालों में ओपीडी की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है, जिसका मुख्य कारण अत्यधिक गर्मी है। लू के कारण शरीर में पानी की कमी, चक्कर आना और हीट स्ट्रोक जैसी गंभीर समस्याएं पैदा हो सकती हैं। उन्होंने विशेष रूप से बच्चों, बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं और पहले से बीमार व्यक्तियों के प्रति अधिक सावधानी बरतने की सलाह दी है क्योंकि ये समूह गर्मी के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। डॉ. कुमार ने सुझाव दिया है कि प्यास न होने पर भी बार-बार पानी पीते रहें और हल्के रंग के सूती कपड़े पहनें ताकि शरीर का तापमान सामान्य बना रहे।

प्रशासन की ओर से सलाह दी गई है कि दिन के सबसे गर्म समय यानी दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे के बीच बाहर जाने से परहेज करें। यदि बाहर जाना अनिवार्य हो, तो सिर को छाते, टोपी या गमछे से ढककर निकलें और साथ में पानी की बोतल जरूर रखें। खान-पान में बासी भोजन और तली-भुनी चीजों से परहेज करना चाहिए, जबकि छाछ, नींबू पानी और ओआरएस के घोल का सेवन अमृत समान है। उन्होंने यह भी चेतावनी दी है कि किसी भी सूरत में बच्चों या बुजुर्गों को बंद खड़ी गाड़ी में अकेला न छोड़ें, क्योंकि इससे जानलेवा स्थिति पैदा हो सकती है।

गर्मी और लू के थपेड़ों से खुद को सुरक्षित रखने के लिए विशेष सावधानी बरतें

लू के लक्षण पहचानें

- तेज बुखार और लगातार सिरदर्द होना।
- चक्कर आना, उल्टी या जी मिचलाना।
- त्वचा का पूरी तरह सूख जाना, लाल होना या शरीर का बहुत गर्म होना।
- बहुत अधिक पसीना आना या पसीना बिल्कुल बंद हो जाना।
- सांसों की गति या धड़कन का अचानक तेज होना।

लक्षण दिखें तो तुरंत क्या करें

यदि किसी व्यक्ति में लू के लक्षण दिखें, तो उन्हें तुरंत छायादार और ठंडी जगह पर ले जाएं। शरीर को ठंडे पानी की पट्टियों से पोंछें और यदि व्यक्ति होश में हो, तो उसे ओआरएस का घोल या पानी पिलाएं। हालत में सुधार न होने पर बिना देरी किए नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टर से संपर्क करें।

आज धूमधाम से मनेगा द्वितीय परशुराम जन्मोत्सव

मंडी अटेली। भगवान परशुराम गौड़ ब्राह्मण सभा अटेली के तत्वावधान में द्वितीय भगवान परशुराम जन्मोत्सव 19 अप्रैल को बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाएगा। इस आयोजन को लेकर क्षेत्र में तैयारियां जोरों पर हैं और लोगों में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है। सभा के प्रधान गौरव गौड़ ने जानकारी देते हुए बताया कि कार्यक्रम का आयोजन ऋतु गार्डन पुराना बस स्टैंड अटेली में किया जाएगा। उन्होंने क्षेत्रवासियों से परिवार सहित कार्यक्रम में पहुंचकर धर्म और संस्कृति के इस महोत्सव का हिस्सा बनने की अपील की है। कार्यक्रम की शुरुआत प्रातः सवा आठ बजे विधि-विधान के साथ हवन यज्ञ से होगी। इसके पश्चात सवा नौ बजे हरियाणवी कलाकार गगन शर्मा द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी जाएंगी। सुबह सवा 10 बजे अतिथियों का आगमन होगा।

विशेष: पृथ्वी दिवस
22 अप्रैल

केवल धरती पर ही जीवन संभव है, यह जानने के बावजूद जाने-अनजाने हम धरती को तरह-तरह से नुकसान पहुंचा रहे हैं। दुनिया भर के वैज्ञानिक मानते हैं कि सौरमंडल के सबसे खूबसूरत ग्रह धरती को बचाना किसी एक सरकार या संगठन का काम नहीं, बल्कि हम सबकी जिम्मेदारी है। हमें जागरूक होना होगा, बदलाव के छोटे-छोटे कदम उठाने होंगे, तभी आने वाली पीढ़ियों के लिए हम अपनी प्यारी धरती को सुरक्षित रख पाएंगे।

हम सब मिलकर बचाएं अपनी प्यारी धरती

आवरण कथा / रजनी अरोड़ा

धरती जीवन का आधार है, जो एक निःस्वार्थ मां की तरह मानव के लिए अनुकूल, सुंदर प्राकृतिक वातावरण ही प्रदान नहीं करती। उसकी मूलभूत जरूरतें (भोजन, पानी, हवा, वस्त्र, घर) भी मुहैया कराती है। विडंबना है कि मनुष्य अपने विकास और सुख-सुविधाएं पाने की अंधाधुंध दौड़ में जाने-अनजाने इसी धरती को सबसे अधिक नुकसान पहुंचा रहा है। दिनों-दिन बढ़ते मानव अतिक्रमण की वजह से जहां प्राकृतिक संसाधनों की निरंतर कमी का सामना करना पड़ रहा है, वहीं कई घरेलू-व्यावसायिक कार्य-कलाप वायुमंडल में कार्बन उत्सर्जन यानी कार्बन डाई-ऑक्साइड और अन्य ग्रीन हाउस गैसों का लेवल निरंतर बढ़ाने में जिम्मेदार हैं। नासा और इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) की रिसर्च के अनुसार पिछले 150 वर्षों में धरती का औसत तापमान लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है। इसका असर केवल प्रकृति पर ही नहीं, बल्कि खेती, पानी, मानव स्वास्थ्य और जीव-जंतुओं के जीवन पर भी पड़ रहा है। इन संकटों से अपनी धरती को बचाने के लिए हम सभी को अपने स्तर पर हर संभव प्रयास करने होंगे।

पर्यावरण की करें सुरक्षा

धरती को बचाने के लिए सबसे जरूरी है पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक होना, अच्छी आदतें अपनाना, बच्चों और दूसरों को भी प्रेरित करना। परिवार में ग्रीन रूल बनाएं और उन्हें अमल करने के लिए सजग रहें। पर्यावरण नीतियों को लेकर सचेत रहें। अपने इलाके में हरित नीतियां (पेड़ लगाने, कचरा प्रबंधन और सार्वजनिक परिवहन सुधार) लागू करवाने की मांग करें। पर्यावरण संगठनों से जुड़ें।

घर को बनाएं ग्रीन होम

घर में ऊर्जा की खपत, कार्बन उत्सर्जन का सबसे बड़ा कारण है। ऊर्जा संरक्षण के लिए जब जरूरत न हो तो कमरे की लाइट, पंखे बंद कर दें। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जब यूज न कर रहे हों तो स्विच ऑफ कर दें। स्टैंडबाय में भी बिजली खर्च होती है। दिन में प्राकृतिक रोशनी का अधिक उपयोग करें। साधारण बल्ब की तुलना में एलईडी बल्ब 75 प्रतिशत कम बिजली खर्च करता है और 10 गुना अधिक चलता है। यह छोटा बदलाव बिजली का बिल कम करता है और कार्बन उत्सर्जन भी। पुराने एसी, फ्रिज और वॉशिंग मशीन बहुत अधिक बिजली खर्च करते हैं। 5 स्टार रेटिंग वाले उपकरण खरीदें। इनसे 30-40 प्रतिशत बिजली बचती है। घर की छत पर सोलर पैनल लगवाना या किसी अक्षय ऊर्जा प्रदाता की मदद से बिजली लेना काफी कारगर है। यह वन-टाइम इंवेस्टमेंट है, जो आने वाले तकरीबन 25 साल तक मुफ्त बिजली देता है। सरकार इसमें सब्सिडी भी देती है। एसी को 24-25 डिग्री पर ही चलाएं। हर एक डिग्री कम करने पर 6 प्रतिशत अधिक बिजली खर्च होती है। घर की एयर सीलिंग यानी दरवाजों और खिड़कियों की दरारें बंद करना, ऊर्जा बचत का सबसे किफायती तरीका है। इससे गर्मियों में ठंडक और सर्दियों में गर्माहट बनी रहती है और हीटिंग-कूलिंग का खर्च 15-30 प्रतिशत तक कम हो जाता है। घर में गैस या कोयले की जगह इलेक्ट्रिक हीट पंप लगाने से कार्बन फुटप्रिंट में 100 किलो कार्बन डाई-ऑक्साइड प्रति वर्ष की कमी आ सकती है। वॉशिंग मशीन हमेशा फुल लोड पर चलाएं। पानी का टेंपरेचर नॉर्मल रखें। पानी गर्म करने में एनर्जी की खपत 75-90 प्रतिशत बढ़ जाती है यानी बिजली का बिल बढ़ जाता है। इसी तरह कपड़े क्लॉथ-ड्रायर में सुखाने के बजाय बाहर धूप या खुली हवा में सुखाएं, क्योंकि वॉशिंग मशीन का क्लॉथ-ड्रायर घर में इस्तेमाल होने वाले इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों (जैसे- फ्रिज, टीवी, डिशवॉशर, एसी, लैपटॉप से कहीं ज्यादा बिजली खर्च करता है।

भोजन ना करें वेस्ट

दुनिया के कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में लगभग 26 प्रतिशत भाग खाद्य उत्पादन का रहता है। इसलिए खाने को वेस्ट ना करें। दुनिया में उत्पादित खाने का एक-तिहाई हिस्सा बर्बाद होता है। यानी खाद्य पदार्थ उगाने में लगा पानी, बिजली और मेहनत, सब बेकार। ऐसे में जरूरत के अनुसार ही खाना बनाना चाहिए। अगर खाना बचता भी है तो उसे फेंकने के बजाय अगले मील में खा लें या जरूरतमंद को दे दें।

सिंगल-यूज प्लास्टिक है हार्मफुल

आज प्लास्टिक-प्रदूषण की समस्या बहुत गंभीर हो चुकी है। इससे बचने के लिए सिंगल-यूज प्लास्टिक की चीजों (पॉलिथीन, प्लास्टिक कप, स्ट्रॉ, बर्तन) का प्रयोग कम से कम करें। कपड़े का थैला, स्टील की बोतल और हर्बल टूथब्रश अपनाएं। पानी के लिए रियूज होने वाली बोतल का इस्तेमाल करें।

कार्यस्थल में रखें ध्यान

अपने कार्यस्थल पर भी छोटे-छोटे प्रयासों से धरती को संरक्षित करने में अपना सहयोग आप दे सकते हैं। एंवॉयर्नमेंट फ्रेंडली सामग्री, एलईडी लाइट, ऊर्जा बचाने वाले उपकरण और कचरे का उचित प्रबंधन वाले उपकरणों का यूज करें। कागज की जगह डिजिटल दस्तावेज उपयोग करें। प्रिंट करना जरूरी हो तो पेपर के दोनों तरफ प्रिंट करें। व्यावसायिक मुद्दों पर परिचर्चा करने के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग को बढ़ावा दें ताकि समय और ऊर्जा की बचत हो। ऑफिस जाने के लिए अकेले कार ड्राइव करके जाने के बजाय कारपूल की आदत डालें। यानी एक गाड़ी में 4 लोग जाएं तो कार्बन उत्सर्जन 75 प्रतिशत कम होता है। मेट्रो, बस, ट्रेन जैसे सार्वजनिक परिवहन में सफर करें। अगर नई गाड़ी खरीदनी हो तो इलेक्ट्रिक वाहन खरीदें। इसमें सब्सिडी भी मिलती है। इससे पेट्रोल-डीजल पर निर्भरता तो कम होगी ही, प्रदूषण भी कम होगा। कम दूरी के लिए साइकिल या पैदल चलने की आदत डालें। पर्यावरण के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए भी बेहतरीन है।

अधिक से अधिक पेड़ लगाएं

पेड़-पौधे धरती को खूबसूरत हरा-भरा ही नहीं बनाते, भूमि में कटाव कम कर मजबूती लाने, भूमि की उर्वरता बढ़ाने, पर्यावरण को प्रदूषण रहित रखने में भी मदद करते हैं। हमें जीवनदायी ऑक्सीजन देते हैं और अपने जीवनकाल में तकरीबन 1 टन कार्बन डाई-ऑक्साइड सोखते हैं। आप अपने जन्मदिन, शादी की सालगिरह या किसी भी खास मौके पर पेड़-पौधे लगाने की परंपरा शुरू कर सकते हैं। कॉरपोरेट ट्री प्लांटेशन ड्राइव में शामिल होकर विभिन्न प्रजाति के पेड़-पौधे लगाकर ऑफिस कंपाउंड में हरियाली बढ़ाएं। हमारे ऐसे प्रयासों से भी धरती पर हरियाली बढ़ेगी। *

जल संरक्षण भी है जरूरी

जलवायु परिवर्तन से पानी का संकट भी धरती पर बढ़ता जा रहा है। दुनिया के कई देशों समेत भारत के कुछ राज्यों में भी भूजल स्तर तेजी से गिर रहा है। जल संरक्षण के लिए भी हम कुछ प्रयास कर सकते हैं। जैसे-ब्रश करते समय नल बंद रखना, कम समय में नहाना और टपकते नलों को ठीक करवाना। ऐसी छोटी-छोटी आदतें मिलकर हजारों लीटर पानी बचा सकते हैं। घर की छत पर वर्षा जल संग्रह प्रणाली लगाएं। यह पानी बगीचे, गाड़ी धोने और फ्लश के लिए उपयोग हो सकता है। बाजार में ऐसे नल उपलब्ध हैं, जो 50 प्रतिशत तक कम पानी उपयोग करते हैं लेकिन दबाव उतना ही रहता है। इससे पानी की बचत होती है। दुनिया के समुद्रों, नदियों में बेशुमार प्लास्टिक जमा हो चुका है। धरती पर मौजूद जल को संरक्षित करने के लिए हमें सजग होना होगा।

केवल एक दिन ही नहीं

रोज मनाएं पृथ्वी दिवस

विगत कई दशकों से हम जाने या अंजाने अपनी धरती को नुकसान पहुंचाते आ रहे हैं। आज धरती के अस्तित्व पर ही संकट मंडराने लगा है। ऐसे में अब यह हमारी ही जिम्मेदारी है कि पृथ्वी संरक्षण के लिए हर संभव प्रयास करें। हर वर्ष मनाया जाने वाला पृथ्वी दिवस, हम सबको यही संदेश देता है।

अवेयरनेस
लोकमित्र गौतम

धरती हम सभी के जीवन का आधार है। लेकिन विडंबना देखिए कि हम सब धरतीवासी इसे ही सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचा रहे हैं। ऐसे में हर साल 22 अप्रैल को मनाया जाने वाला पृथ्वी दिवस, केवल एक तारीख भर नहीं है बल्कि समूचे मानव समुदाय को एक चेतावनी और सामूहिक संकल्प का प्रतीक भी है।

इस दिन की महत्ता: पृथ्वी दिवस हमें याद दिलाता है कि विकास की अंधी दौड़ में हम अपनी जड़ों को ही नष्ट करते जा रहे हैं। बढ़ता प्रदूषण, घटते जंगल और दिनोंदिन डराता जलवायु परिवर्तन, ये सब संकेत हैं कि हमें अपनी सोच और पृथ्वी मां के साथ किए जाने वाले अपने व्यवहार को बदलने की जरूरत है। पृथ्वी दिवस हमें इस बात की भी प्रेरणा देता है कि हमारे छोटे-छोटे प्रयासों से बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियां आसानी से निभ सकती हैं ताकि आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित पृथ्वी, एक स्वच्छ वातावरण और संतुलित पर्यावरण मिल सके।

पृथ्वी दिवस की शुरुआत: पृथ्वी दिवस की शुरुआत पिछली सदी में 1970 में हुई थी। इसके पीछे उस समय की वैश्विक स्थितियां जिम्मेदार हैं। सन् 1960 के दशक में अमेरिका सहित दुनिया के कई हिस्सों में औद्योगीकरण तेजी से बढ़ रहा था, लेकिन पर्यावरण संरक्षण पर कोई खास ध्यान नहीं दिया जा रहा था। नदियां प्रदूषित हो रही थीं, हवा दिन पर दिन जहरीली हो रही थी और जैव-विविधता लगातार खतरे में थी। इसी सबको देखते हुए अमेरिकी सीनेटर गेलॉर्ड नेल्सन ने पर्यावरण के प्रति जन-जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से 22 अप्रैल 1970 को पृथ्वी दिवस का आयोजन किया। इस दिन करीब 2 करोड़ लोग सड़कों पर उतरे और पर्यावरण संरक्षण की मांग की। यह एक ऐतिहासिक जन-आंदोलन बन गया। इसके बाद धीरे-धीरे यह विभिन्न वैश्विक अभियानों में बदल गया और आज दुनिया भर के 190 से ज्यादा देश पृथ्वी दिवस मनाते हैं।

अधिक प्रासंगिक है आज: पृथ्वी दिवस की प्रासंगिकता, इसके शुरू किए जाने के समय से कहीं ज्यादा आज है। हम जिन समस्याओं विशेषकर पर्यावरणीय समस्याओं का आज सामना कर रहे हैं, इससे पहले ये कभी इस कदर भयानक नहीं थीं। बढ़ते तापमान, पिघलते ग्लेशियर आज जलवायु परिवर्तन का सबसे बड़ा कारण हैं। दिल्ली जैसे शहरों की हवा प्रदूषण के कारण इस कदर जहरीली है कि दुनिया के कई स्वास्थ्य संगठन कह चुके हैं कि दिल्ली में पूरी जिंदगी गुजारने का मतलब है, अपनी जिंदगी के 10 साल कम कर लेना। लगभग यही हाल जल संकट के मामले में भी है। किसी एक देश में नहीं बल्कि पूरी दुनिया आज जल संकट से गुजर रही है। अगर बात वनों के विनाश या जैव-विविधता के नुकसान की करें तो जितना कहें, वह कम होगा। तमाम चेतावनियों और वैज्ञानिक अध्ययनों से निकले निष्कर्षों के बावजूद हर साल दुनिया से लाखों हेक्टेयर जंगल खत्म हो रहे हैं। यह गंभीर चिंता का विषय है।

वैश्विक है संकट: पृथ्वी में हर तरीके के सकारात्मक वातावरण के क्षरण का यह संकट किसी एक देश का संकट नहीं है, दुनिया के हर हिस्से में यही हो रहा है। अपवाद के तौर पर अगर कुछ देश इस विनाश के हिस्सेदार नहीं हैं, तो दूसरों के कारण उन्हें इसकी सजा भुगतनी पड़ रही है। जहां तक अपने देश भारत का सवाल है, तो हमारे यहां तेजी से बढ़ते शहरीकरण के कारण पर्यावरण पर बहुत गहरा दबाव है। खेती में रासायनिक उर्वरकों की अधिकता और लगातार मिट्टी के अनुर्वरक होते जाने के कारण फसलों का खाद पर ज्यादा से ज्यादा निर्भर होते जाना, जहां चाहकर भी मृदा प्रदूषण से हम बच नहीं सकते, वहीं नदियों का प्रदूषण भी दिनोंदिन गहराता जा रहा है। हालांकि हाल के दिनों में हमारे देश में कई सकारात्मक पहलें भी देखने को मिली हैं। मसलन सौर ऊर्जा मिशन के बढ़ते कदम, प्लास्टिक प्रतिबंध के आधे-अधूरे ही सही पर लगातार बार-बार चलाए जाने वाले अभियान, किचन गार्डेनिंग और ऑर्गेनिक खेती के हो रहे प्रयास, ये दिखाते हैं कि अगर इच्छाशक्ति हो तो धरती को बर्बाद होने से हम सब सामूहिक प्रयासों से बचा सकते हैं।

छोटे कदम भी हैं महत्वपूर्ण: पृथ्वी दिवस की सार्थकता तभी होगी, जब हर आदमी आगे बढ़कर इसके संरक्षण में अपना योगदान देगा। अगर हम लोग संकल्प ले लें कि रोजमर्रा की जिंदगी में प्लास्टिक का उपयोग नहीं करेंगे, पानी, बिजली की अंधाधुंध बर्बादी नहीं करेंगे, पेड़ लगाएंगे और लगे हुए पेड़ों की देखभाल करेंगे, तो इतना भर करने से ही पृथ्वी के सामने जो समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं, इनमें से आधी खत्म हो जाएंगी और अगर सरकार, विभिन्न संस्थाएं और समाज इसके विरुद्ध उठ खड़ा हो तब तो तमाम परेशानियों से मुक्त हो सकते हैं। *

कविता
घमंडीलाल अग्रवाल

मेरा गांव

मिट्टी में मुक्तक मिलते हैं
गलियों-गलियों गीत,
गाय-भैंस के रंभाने में
कविता और अगीत।
छप्पर ऊपर की खपरैलें
अर्पण करती लेख,
टेढ़ी पगडंडियां खींचती
उपन्यास की रेख।
जन-जन की बोली उपजाती
मधुर हास्य की गंध,
पहनावों में पहेलियों के
कई संकलन बंद।
नूतन प्रेमकथा देने की
पनघट ने ली ठान,
शेर, गजल, गीतिका लुटाती
अधरों की मुस्कान।
यहां रहट की ध्वनियां देतीं
एकांकी के भाव,
लेखक, कथाकार, कवि, शायर
लोगो, मेरा गांव।

व्यंग्य / पूरन सरमा

बस हो या रेल सब में दुर्जन यात्रा कर रहे हैं, वे आएंगे और आपकी सज्जनता का लाभ उठाकर आपकी सीट हथिया लेंगे। आप खड़े-खड़े परेशान होते रहेंगे और दूसरा सहयात्री पूरी सीट पर पांव फैलाकर बैठा रहेगा।

त्याग दीजिए नैतिकता

हालांकि आप अब तक नैतिकता का त्याग कर ही चुके होंगे, लेकिन यदि नहीं किया है तो नेक सलाह मानकर इसे अविलंब त्यागिए। इसमें बंधे रहना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। त्याग और बलिदान का युग नहीं है यह। यह युग घोर स्वार्थ-परकता, अन्याय, छल, कपट तथा प्रपंच का है। आपने थोड़ी-सी भी शालीनता बरती कि गए काम से। नैतिकता से आदमी में निष्ठा, लगन व मेहनत के भाव जन्म लेते हैं और ये भाव अब गिर चुके हैं। इन भावों को अपनाने से आदमी का पतन होता है तथा लोककल्याण की चक्की में पिसकर नष्ट हो जाता है। श्रद्धा, आदर्श, परोपकार एवं ईमानदारी जैसे शब्द अब महत्त्व खो चुके हैं। इनके अर्थ समझने की कोशिश मत करिए। वैसे तो शब्दकोषों के जो नए संस्करण आएंगे, उनमें आपको ये शब्द ही नहीं मिलेंगे। इसलिए नैतिकता को त्यागिए और स्वार्थ की अंधी दौड़ में शरीक हो जाइए, तब तो आपकी नैया इस भवसागर से पार हो जाएगी, अन्यथा इसी में डुबकी लगाते रहेंगे।

दफ्तर में जिस व्यक्ति के पास जरा-सी भी नैतिकता है, बस वही तकलीफ पा रहा है। वर्ना दूसरे तमाम लोग बाहर गुमटियों पर चाय-समोसे उड़ा रहे हैं, पान की पीकें उगल रहे हैं। आपने ही कौन-सा च्यवनप्राश खाया है, जो सारा कौशल दिखाकर पूरे दफ्तर के कार्य को निपटाना चाहते हैं। काम मत कीजिए, बस बात कीजिए। वेतन काम करने का नहीं, ऑफिस में हाजिरी लगाने का मिलता है, वह आप कर ही देते होंगे। काम करने के लिए घूस, रिश्वत तथा भेंट आदि का चलन है। भ्रष्टाचार किसलिए फैलाया गया है? बस इनका लाभ उठाइए। यह लाभ उठाने के लिए होता है, त्यागने के लिए नहीं। वेतन तो उन लोगों को भी यथासमय मिल रहा है, जो काम नहीं करते, फिर आपको कौन-सा हार्ड ड्यूटी एलाउंस मिल रहा है। यह आपकी नैतिकता ही तो है, जो आपको चैन नहीं लेने देती। नैतिकता बड़ी खराब है, जिसमें एक बार घुस जाए, निकलने का नाम ही नहीं लेती है। मेरी तमाम सज्जनों से अपील है कि वे आपनी सज्जनता को त्यागें। युग बड़ा खराब है, सब घात लगाए बैठे हैं। आपको गच्चा देने की फिराक में है दुनिया। दुर्जनता को अपनाइए, आपकी सारी समस्याएं हल हो जाएंगी। समस्याओं के पहाड़ तैयार करने हैं तो सज्जन बने रहिए। यकीन न हो तो अभी आप सज्जनता के पक्ष में जनमत संग्रह करवाकर देखिए, आप अकेले रह जाएंगे। अगर यह सोचते होंगे कि यूनियन बना लेंगे, तो यह भी दिवास्वप्न है। वैसे यूनियनबाजी सज्जन आदमी कर भी नहीं सकता। इसके लिए भी आपको घाट-घाट का पानी पीने के बाद सज्जनता का पाजामा हर हालत में उतार कर फेंकना होगा। जो आदमी युग की नब्ज नहीं पहचानता, वह पछताता है। यदि आप पछताने का चाव रखते हैं तो जरूर, नैतिकता को अपनाए रहें।

सज्जनता आपके भीतर होगी तो आप पब्लिक ट्रांसपोर्ट में कोई भी यात्रा आराम से नहीं कर सकेंगे। यात्रा के दौरान आपके पास जब भी कोई महिला आएगी तो खड़े होकर आप उसे बैठने को स्थान दे देंगे। अब आप खड़े रहिए, घंटे-दो घंटे। बस हो या रेल सब में दुर्जन यात्रा कर रहे हैं, वे आएंगे और किसी न किसी तरह आपकी सज्जनता का लाभ उठाकर आपकी सीट हथिया लेंगे। आप में शालीनता, विनम्रता और सदाशयता कूट-कूट कर जो भरी है, उसी का परिणाम है कि आप खड़े-खड़े परेशान होते रहेंगे और दूसरा सहयात्री पूरी सीट पर पांव फैलाकर बैठा रहेगा। आपकी हिम्मत नहीं होगी कि आप उससे यह कह दें कि वे अपने पांव समेट लें। काश, इस समय आपके पास दुर्जनता होती, लफंगई होती तो आपको सीट मिल जाती। शिष्टाचार इस युग की घोर बुराई है। आप बुराई अपनाते हैं तो यह मूर्खता नहीं तो और क्या है?

मेरी तो यही सलाह है कि आप में जो भी उच्च संस्कार बतौर इंसानियत के पैदा हो गए हैं, उन्हें अपने वैयक्तिक जीवन के हित संरक्षण के लिए अविलंब त्याग दीजिए। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

चंडीदत्त रचना-समग्र

अपने छोटे से जीवन में ही चंडीदत्त शुक्ल ने पत्रकारिता के साथ साहित्य लेखन में भी अलग पहचान बना ली थी। उनकी उपलब्ध अठहत्तर कविताओं, कहानियों और साक्षात्कार का संकलन 'चंडीदत्त रचना समग्र' पुस्तक के रूप में हाल में प्रकाशित हुआ है। इन रचनाओं से गुजरते हुए उनकी साहित्य की गहरी समझ और नई दृष्टि से रचने की प्रतिभा प्रमाणित होती है। 'जब मन का हर डर मर जाए', 'हंसती खेलती औरत', 'सो जाओ कि रात बहुत गहरी है' जैसी अनेक कविताएं और 'फिर आना अखिलेश और हंसना जोर-जोर से..', 'एक आंसू गुनगुनाता रहा रात भर' जैसी कहानियां उनके क्रिएटिव रेंज की तस्दीक करती हैं। पुस्तक में संकलित साक्षात्कार में उन्होंने अपने आरंभिक जीवन और साहित्यिक सरोकार पर बेबाक विचार भी व्यक्त किए हैं। साहित्य से आम लोगों की बढ़ती दूरी के बारे में चंडीदत्त के यह विचार ध्यान देने योग्य हैं, 'इन दिनों बहुतेरा साहित्य अमूर्त भाषा और भाव के साथ लिखा जा रहा है, जिससे जुड़ पाना सामान्य पाठक के बस का नहीं है।' *

पुस्तक: चंडीदत्त रचना-समग्र, **संपादक:** डॉ. शैलेंद्र नाथ मिश्र-राजेश ओझा, **मूल्य:** 299 रुपए, **प्रकाशक:** श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली, नोएडा

लघुकथा / गोविंद भारद्वाज

मजदूर

भाई साहब पिछले हफ्ते जिस लड़की को हम लोग देखने गए थे, उस लड़की का सिविल सेवा में चयन हो गया है। अब तो रिश्ता पक्का कर दीजिए।' गोपी बाबू के छोटे भाई ने कहा।

'नहीं छोटे, वह लड़की हमारे घर की कभी बहू नहीं बन सकती।' गोपी बापू ने कहा।

'क्यों भैया क्या दोष है उस बच्ची में?' छोटे ने पूछा। 'दोष उसमें नहीं उसके पिताजी में है।' गोपी बापू ने पलटकर कहा। 'कौन सा दोष.. कैसा दोष भैया?' 'उसके पिताजी हमारे ही कारखाने में मजदूर हैं।' नथुने फुलाते हुए गोपी बापू ने कहा। इस पर छोटे ने कहा, 'यह तो अच्छी बात है। मेहनती बाप की मेहनती बेटी अपने घर की बहू बनेगी।' छोटे भाई ने समझाया। 'नहीं छोटे, हम अपने मजदूर को अपने बराबर नहीं बैठा सकते। उसको अपना समधी नहीं बना सकते। उसके पसीने की बदबू हमारे बदन का इत्र नहीं बन सकती।' गोपी बापू ने दलील दी। उसी समय मोबाइल की घंटी बजी। उधर से आवाज आई, 'हैलो गोपी बाबू, सिटी अस्पताल आ जाइए तुरंत। आपके बेटे का एक्सीडेंट हो गया है।'

'अरे..अभी आया।' गोपी बापू ने माथे का पसीना पोंछा फिर घबराते हुए अस्पताल भागे। अस्पताल पहुंचकर जो दृश्य गोपी ने देखा, उसे देखते रह गए। दरअसल, वही मजदूर उनके लड़के को अपना खून दे रहा था, जिसको वे अपने बराबर बैठाना नहीं चाहते थे। *

हो सकता है आपने कुछ नेशनल पार्क और वाइल्ड लाइफ सेंक्चुरी की यात्रा की हो। लेकिन अगर आप दुनिया के सबसे अनूठे नेशनल पार्क का अनुभव लेना चाहते हैं तो आपको मणिपुर स्थित तैरते हुए नेशनल पार्क कीबुल लामजाओ की यात्रा करनी होगी। इस अनोखे नेशनल पार्क की विशेषताओं के बारे में जानिए।

दुनिया का एकमात्र तैरता हुआ नेशनल पार्क कीबुल लामजाओ

टूरिस्ट प्लेस

समीर चौधरी

मणिपुर की लोकटक झील के दक्षिण हिस्से में कीबुल लामजाओ नेशनल पार्क यानी राष्ट्रीय उद्यान है, जोकि दुनिया का एकमात्र तैरता हुआ नेशनल पार्क है। मणिपुर के विष्णुपुर जिले में, इंफाल से लगभग 50 किमी. की दूरी पर यह पार्क 40 वर्ग किमी. में फैला हुआ है और यह लुप्तप्राय संगाई हिरण (नृत्य करने वाला हिरण) का अकेला प्राकृतिक घर है। यह उद्यान न केवल पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था (मत्स्य पालन, जल विद्युत) के लिए भी मायने रखता है।

जैव-विविधता से भरपूर: कीबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, जैवविविधता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह अपनी विशिष्ट तैरती फुमदिस और यहां खास तौर से पाए जाने वाले संगाई हिरण के लिए भी विख्यात है। फुमदिस सड़ी-गली वनस्पतियों, मिट्टी और जड़ों का तैरता हुआ समूह होता है। यह झील के पानी के ऊपर तैरता रहता है, जिसमें 450 से अधिक जलीय वनस्पतियों की प्रजातियां, जंगली सूअर, हॉग हिरण, बड़ी भारतीय सिवेट जैसे जीव पाए जाते हैं। नवंबर से मार्च के बीच इस पार्क में प्रवासी पक्षी भी आते हैं, इसलिए यात्रा करने का यही सबसे अच्छा समय माना जाता है।

अपने-आप में अनूठा राष्ट्रीय उद्यान: कीबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, एक ऐसी जगह है, जहां प्रकृति ने अपने नियम नए सिरे से लिखे हैं, जिसकी वजह से नाजुक, तैरता हुआ एक अजूबा भूखंड बन गया है। इस अलौकिक लैंडस्केप में मणिपुर का नृत्य करने वाला संगाई हिरण घूमता हुआ दिखता है, जिसके तेज गति से दौड़ते कदम, तैरते घास के मैदान पर बहुत आकर्षक लगते हैं। एक जमाना था जब यह माना जाने लगा था कि संगाई हिरण विलुप्त हो गया है। ऐसे में यहां उनके बचे रहने की संभावना ने नई उम्मीद को जगाया है, दरअसल, अनोखी प्राकृतिक संरचना फुमदिस की स्थिरता का यहां के जीवों के लिए बहुत महत्व है। न सिर्फ हिरण के लिए बल्कि उस पूरे ईकोसिस्टम के लिए भी, जो पृथ्वी पर कहीं और है ही नहीं।

बढ़ रही नाचते हिरण की संख्या: सन् 1954 तक यह मान लिया गया था कि संगाई हिरण की प्रजाति लुप्त हो गई है। संगाई तैरते फुमदिस के अतिरिक्त कहीं भी जीवित नहीं रह सकता है। इसकी वजह शिकार और फुमदिस का खत्म होना माना गया। इसके लगभग दो दशक बाद सन् 1974-75 के बीच किए गए हवाई सर्वे के दौरान उम्मीद की किरण जागी। कीबुल लामजाओ के तैरते फुमदिस में लगभग 14 संगाई देखे गए, जिसकी वजह से इनके संरक्षण प्रयासों में नया जोश आया और सन् 1995 तक इनकी संख्या बढ़कर 155 हो गई, जो सन् 2016 में 260 तक पहुंच गई। तैरते फुमदिस पर संगाई की नजाकत भरी चाल ने ही इसे 'नाचते हिरण' का नाम दिया है।

इसलिए मिला राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा: संगाई की खोज के बाद ही भारत सरकार और मणिपुर की सरकार ने वन्यजीवन संरक्षण कानून 1972 के तहत 1977 में कीबुल लामजाओ को 'राष्ट्रीय उद्यान' (नेशनल पार्क) घोषित किया। संगाई हिरण और उसके प्राकृतिक आवास स्थल यानी फुमदिस के लिए यह कानूनी सुरक्षा जरूरी थी। संगाई केवल एक प्रजाति नहीं है बल्कि सांस्कृतिक जड़ों वाला पशु है, जिसने हजारों वर्षों के दौरान तैरते फुमदिस पर रहने के लिए खुद को ढाल लिया है और यह लैंडस्केप व मणिपुर के लोगों के बीच गहरे संबंध को प्रतिबिंबित करता है।

मौजूद हैं कई चुनौतियां: इस अनोखे राष्ट्रीय उद्यान के समक्ष कई इकोलॉजिकल चुनौतियां हैं। लोकटक हाइड्रोइलेक्ट्रिकल प्रोजेक्ट कृत्रिम रूप से पानी के स्तर को नियंत्रित करता है, जिससे फुमदिस चक्र बाधित होता है और यहां के तैरते हुए ईकोसिस्टम की स्थिरता के लिए खतरा उत्पन्न होता है। गौरतलब है कि कीबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान को परिभाषित करने वाला फीचर उसका तैरता इकोसिस्टम ही है, जो संगाई को जीवित रखने के लिए आवश्यक है। एक ताजा अध्ययन में मणिपुर के इस आइकॉनिक हिरण के भविष्य को लेकर गंभीर चिंताएं व्यक्त की गई हैं। क्लाइमेट चेंज की वजह से 2070 तक फुमदिस सिकुड़ जाएगा और जब फुमदिस नहीं होगा, तो संगाई का अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाएगा। *

फुमदिस से जुड़े दिलचस्प तथ्य

फुमदिस वनस्पति, मिट्टी आदि की तैरती हुई मोटी परत होती है, जोकि जलीय पौधों और अन्य चीजों से मिलकर हजारों वर्षों में तैयार होती है। यह संगाई एवं अन्य वन्यजीवों को चरने की जगह, प्रजनन स्थल और आवास प्रदान करती है। दिलचस्प यह है कि फुमदिस प्राकृतिक जल चक्र है यानी यह झील के तले तक डूब जाती है पौष्टिक तत्व जज्ब करने के लिए। फिर कुछ समय बाद ऊपर उठ जाती है। यह चक्र उसके बने रहने के लिए आवश्यक है। फुमदिस केवल वनस्पति का टुकड़ा नहीं है बल्कि जीवित स्ट्रक्चर है। यह एक मोटी परत होती है, जिस पर बड़े जानवर भी रहते हैं। इस पर जो घास उगती है वह पूरे साल यहां निवास करने वाले वन्य जीवों को आवश्यक पौष्टिक तत्व प्रदान करती है।

सेल्फ इंप्रूवमेंट

शिखर चंद जैन

कई बार लोग प्रतिभावान और क्षमतावान होते हुए भी एक सीमित दायरे से बाहर निकलकर कुछ बड़ा अचीव नहीं कर पाते। अगर लाइफ में कुछ बड़ा हासिल करना है तो अपनी क्षमताओं को पहचान कर उसे एक्सप्लोर करना जरूरी है। यह कैसे होगा, बता रहे हैं आपको।

अपनी छिपी स्ट्रेंथ को ऐसे करें एक्सप्लोर

हम अकसर अपने आपको एक मानसिक दायरे में बंद कर लेते हैं और फिर कुएं के मेंढक की तरह उस दायरे से बाहर निकलने की कोशिश ही नहीं करते। स्वयं द्वारा निर्मित अपनी मानसिक शारीरिक सीमाओं को अपनी वास्तविकता मान लेते हैं, जबकि वे केवल हमारे विचारों की उपज होती हैं। ऐसे में हम आगे नहीं बढ़ पाते। आगे बढ़ने और तरक्की करने के लिए जरूरी है अपनी क्षमता को एक्सप्लोर करना। इसका अर्थ है, अपने डर के पार जाना। जब आप स्वयं पर लगे 'लेबल' हटा देते हैं, तो आप पाते हैं कि आप उससे कहीं अधिक हैं, जितना आपने कभी सोचा था।

हमारे भीतर है असीमित क्षमता: हम अपनी क्षमताओं का केवल 10 प्रतिशत ही इस्तेमाल करते हैं। यह आपने अकसर पढ़ा या सुना होगा। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि बाकी 90 प्रतिशत क्षमता का क्या होता है? वह बिना उपयोग के ही व्यर्थ के कामों में जाया हो जाती है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि इंसानी दिमाग की क्षमता का कोई अंत नहीं है। कैरोल ड्वेक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'माइंडसेट' में बताती हैं, 'ग्रोथ माइंडसेट' के साथ, हम अपनी क्षमता को असीमित रूप से विकसित कर सकते हैं। जब हम यह मानते हैं कि हमारी बुद्धिमत्ता और प्रतिभा को मेहनत और सीखने के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है, तो हम अपनी सीमाओं को तोड़कर आगे बढ़ सकते हैं।' अब्राहम मैस्लो, जो मानवतावादी मनोविज्ञान के जनक माने जाते हैं, का मानना था कि हर इंसान में आत्म-वास्तविकीकरण की क्षमता होती है। यह वह अवस्था है, जहां हम अपनी पूरी क्षमता को पहचानते हैं और उसे हासिल करते हैं। उनके अनुसार, यह हम सभी की अंतर्निहित इच्छा होती है कि हम वह बनें, जो हम बनने के लिए सक्षम हैं।

लोगों का साथ लें: हमारी क्षमता केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक भी है। आधुनिक समाजशास्त्र के प्रमुख संस्थापकों में से एक एमिल दुर्खीम का मत है कि कि हम सामाजिक संबंधों और सहयोग के माध्यम से अपनी क्षमता को बढ़ा सकते हैं। हमारे आस-पास के लोग, हमारी संस्कृति और हमारा सामाजिक माहौल हमारी क्षमताओं को आकार दे सकते हैं। दूसरों की मदद लेने से ही नहीं, उनकी मदद करने से भी हमारी क्षमताएं बढ़ती हैं। प्रमुख समाजशास्त्री मैक्स वेबर का मानना था कि अनुशासित और केंद्रित मेहनत, जो कि एक सामाजिक गुण भी है, से हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं और अपनी क्षमता का अधिकतम उपयोग कर सकते हैं।

कैसे करें अपनी क्षमता को एक्सप्लोर: अपनी असीमित क्षमता को एक्सप्लोर करने के लिए सबसे पहले, यह विश्वास करें कि आप में कुछ भी हासिल करने की क्षमता है। कभी भी नई चीजें सीखना न छोड़ें। नई किताबें पढ़ें और निरंतर नए अनुभव प्राप्त करें। कभी भी हार न मानें। अपनी असफलताओं से सीखें और आगे बढ़ें।

दिमाग के लचीलेपन का इस्तेमाल करें: जीनियस पैदा नहीं होते, गहन अभ्यास से जीनियस बनते हैं। प्रतिभा विकसित की जा सकती है। हमारा दिमाग लचीला होता है। इसका नियमित उपयोग और दिमागी मशक्कत करने से इसकी क्षमता निरंतर बढ़ती है। इस संबंध में जिम क्विक अपनी बेस्ट सेलर पुस्तक 'लिमिटलेस' में लिखते हैं, 'अपने दिमाग को अपग्रेड करें, कुछ भी तेजी से सीखें और अपने असाधारण जीवन को अनलॉक करें।' उनका कहना है कि हम अपनी सोच (माइंडसेट), प्रेरणा (मोटिवेशन) और तरीकों (मेथड्स) में बदलाव करके अपनी दिमागी क्षमताओं को असीमित कर सकते हैं, जिसमें सीमाओं को चुनौती देना, नींद को प्राथमिकता देना और लगातार अभ्यास करना शामिल है, ताकि हम तेजी से सीख सकें और अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। मैं यह नहीं कर सकता, जैसे विचारों को 'मैं यह सीख सकता हूं' में बदलें। अपनी बुद्धि को स्थिर न मानें, यह बढ़ सकती है। *

अक्षय तृतीया विशेष

हिंदू पंचांग के अनुसार हर साल वैशाख महीने के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाता है अक्षय तृतीया का पर्व। मान्यता है कि इस दिन किए जाने वाले शुभ कार्यों का अक्षय फल मिलता है। इस पर्व की महत्ता, इससे जुड़ी परंपराओं और मान्यताओं पर एक दृष्टि।

शुभ कार्यों का अक्षय फल प्रदान करती अक्षय तृतीया

पर्व-संस्कृति

धीरज बसाक

भारतीय पंचांग में कुछ तिथियां पूरे जीवन-दर्शन को अपने भीतर समेटे रहती हैं। अक्षय तृतीया ऐसी ही एक विशिष्ट तिथि है, जो अक्षयता यानी कभी न समाप्त होने वाली ऊर्जा, पुण्य और समृद्धि का प्रतीक बनकर उभरती है।

धार्मिक-पौराणिक मान्यताएं: अक्षय तृतीया की तिथि का धार्मिक और पौराणिक आधार भी इसे विशेष बनाता है। मान्यता है कि इसी दिन भगवान विष्णु के अवतार श्री परशुराम जी का जन्म हुआ था, जो धर्म और न्याय की स्थापना के प्रतीक माने जाते हैं। यह भी मान्यता है कि इसी दिन वेदव्यास ने महाभारत की रचना आरंभ की थी, जो भारतीय सभ्यता के नैतिक और दार्शनिक आधारों को समझने का सबसे बड़ा ग्रंथ है और इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने अपने मित्र सुदामा द्वारा सच्चे भाव से दिए गए एक छोटे से दान के बदले उन्हें दो 'लोक' प्रदान कर दिए थे। इन सभी कथाओं का सार यही है कि निःस्वार्थ भाव से किया गया कर्म कभी नष्ट नहीं होता।

सिखाती है जीने का संतुलित तरीका: भारतीय संस्कृति में यह विचार बहुत गहराई तक समाया हुआ है कि संसार की हर भौतिक वस्तु नश्वर है। लेकिन सत्कर्म, करुणा और धर्म के फल अक्षय होते हैं। अक्षय तृतीया इसी शाश्वत सत्य का उत्सव है। यह तिथि हमें याद दिलाती है कि जीवन में किए गए अच्छे कर्म, दान, सद्भाव कभी व्यर्थ नहीं जाते, वे किसी न किसी रूप में अक्षय बने रहते हैं। यह हमें केवल पूजा-पाठ की संस्कृति ही नहीं सिखाती बल्कि जीवन जीने का एक संतुलित और संवेदनशील तरीका भी सिखाती है।

कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन: अक्षय तृतीया पर्व जिस समय मनाया जाता है, वह रबी की फसल के पकने का समय होता है। खेतों में सुनहरी बालियां लहलहा रही होती हैं और किसान अपनी नई फसल को भगवान को अर्पित करते हैं। यह केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं बल्कि मानव और प्रकृति के बीच संतुलन और सम्मान का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को माता के रूप में देखा गया है और अक्षय तृतीया, प्रकृति के उस मातृत्व के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर भी है।

धार्मिक-सामाजिक-आर्थिक महत्व: अक्षय तृतीया के दिन सोना खरीदने की परंपरा केवल भौतिक समृद्धि का प्रतीक नहीं है बल्कि इस विश्वास का प्रतीक भी है कि आज किया गया निवेश भविष्य में स्थाई फल देगा। नए कार्यों की शुरुआत, गृह प्रवेश और विवाह आदि के लिए इस दिन को अत्यंत शुभ माना जाता है। विशेष बात यह है कि इस दिन किसी विशेष मुहूर्त की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि पूरा दिन ही शुभ-मुहूर्त वाला होता है।

दान-पुण्य और सेवा का संदेश: अक्षय तृतीया का महत्व केवल सोने-चांदी, आभूषणों या अन्य भौतिक वस्तुओं की खरीदारी तक ही सीमित नहीं है। इस दिन अन्न, जल, वस्त्र और कलश के दान करने की भी प्रथा है। गर्मी के मौसम में जरूरतमंदों को पानी पिलाना, भूखों को भोजन कराना, इस दिन ये सभी कार्य अत्यंत पुण्यदायी माने जाते हैं। ये परंपराएं हमें सिखाती हैं कि समाज में समृद्धि तभी अक्षय हो सकती है, जब हर किसी का उसमें हिस्सा हो। अक्षय तृतीया इसी सांस्कृतिक दर्शन के संतुलन का नाम है, जो बताती है कि सिर्फ भौतिक प्रगति ही पर्याप्त नहीं है बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक विकास भी उतना ही जरूरी है।

शुभ कर्मों से मिलता है अक्षय फल: अक्षय तृतीया भारतीय संस्कृति की उस गहरी परंपरा से नाता रखती है, जहां धर्म, अर्थ, प्रकृति और समाज, चारों का सुंदर समन्वय होता है। यह तिथि हमें यह विश्वास दिलाती है कि हमारे कर्म सही दिशा में हैं, तो उनका फल कभी समाप्त नहीं होगा। वास्तव में यही अक्षयता का वास्तविक दर्शन है। एक ऐसा जीवन, जिसमें अच्छाई निरंतर प्रवाहित होती रहे। इस प्रकार देखें तो अक्षय तृतीया केवल एक पर्व नहीं बल्कि प्राचीन भारतीय जीवन-दर्शन की आत्मा का मूल है, जो हमें सिखाती है- जो भी शुभ करो, वह सदा के लिए अक्षय हो जाता है। *

प्रवृत्ति

शाहिद ए. चौधरी

ज्ञान-संस्कृति-विचारों की नई खिड़की खोलती हैं किताबें

भले ही पढ़ने और लिखने की नई-नई तकनीकें विकसित हो चुकी हैं, लेकिन किताबें हाथ में लेकर पढ़ने का सुख अनोखा होता है। पुस्तक पढ़ने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने और कॉपीराइट के प्रति जागरूक करने के लिए ही **23 अप्रैल को विश्व पुस्तक, कॉपीराइट दिवस** मनाते हैं। इस दिवस की महत्ता पर एक नजर।

किताबें खिड़की की तरह होती हैं, जिसमें से दिखाई देता है एक नया संसार। हर नए पृष्ठ के साथ किताबें परिचित कराती हैं- नए लोगों से, नई संस्कृतियों से और नए विचारों से। गांधीजी ने कहा था, 'विचारों के युद्ध में पुस्तक ही शस्त्र है।' शायद यही वजह है कि ई-बुक्स के इस दौर में भी अनेक लोगों को अच्छे कागज पर छपी, जिल्द में बंधी, किताब अपने हाथों में लेकर पढ़ना ही अच्छा लगता है। हालांकि ऐसे लोगों को शायद आज परंपरागत मूल्यों में यथास्थिति का पक्षधर माना जा सकता है। लेकिन इससे पुस्तकप्रेमियों को कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि किताबें पढ़ने की उनकी आदत जो बन गई है।

नई पीढ़ी हो रही किताबों से दूर

पढ़ने की प्रवृत्ति को लेकर एक पक्ष यह है कि रील्स और वीडियोज की आधुनिक चकाचौंध में गुम आज की पीढ़ी तो टेक्स्ट बुक्स की तुलना में नेट के वीडियो लेक्चर्स को वरीयता देती है। यह पीढ़ी किताब पढ़ने की बजाय ऑडियो-बुक्स को सुनना पसंद करती है। क्या पढ़ने और सुनने में समान एकाग्रता बनी रहती है और बराबर का ज्ञान मिलता है? इस पर बहस हो सकती है। बहरहाल, युवा पीढ़ी किताबों से जिस अंदाज से दूर हो रही है या उसे बंद कर रही है या उसे खोलना ही नहीं चाहती है, उस पर शम्स तबरेज का यह शेर याद आता है-

अजीब किस्म की उभरी थी शक्ल लफ्जों से
किताब बंद न करता तो डर गया होता।

इसलिए मनाते हैं विश्व पुस्तक दिवस

किताबों से बढ़ती दूरी की पृष्ठभूमि में यूनेस्को की कोशिश है कि लोग किताबों को खोलें, उन्हें पढ़ें, उनमें अपनी दिलचस्पी बढ़ाएं और ज्ञानी बनें, क्योंकि किताबों से बढ़कर कोई पक्का दोस्त नहीं होता। किताबें पीढ़ियों के बीच में और संस्कृतियों के बीच में पुल का काम करती हैं। इसी तथ्य को मान्यता प्रदान करने के लिए यूनेस्को यानी संयुक्त राष्ट्र संघ हर साल 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस मनाता है।

इस वर्ष के लिए चयनित पुस्तक राजधानी

हर साल इस जश्न को मनाने के लिए यूनेस्को व पुस्तक उद्योग के मुख्य सेक्टर्स- प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता, पुस्तकालयों का प्रतिनिधित्व करने वाले अंतरराष्ट्रीय संगठन मिलकर विश्व पुस्तक राजधानी का चयन करते हैं। चुना हुआ शहर सभी आयु वर्गों और सभी समाजों में किताबों और पढ़ने की संस्कृति को प्रोत्साहित करता है, न सिर्फ मेजबान देश में बल्कि पूरे विश्व में। यूनेस्को ने अब तक 26 विश्व पुस्तक राजधानियां घोषित की हैं, जिनकी शुरुआत 2001 में मेड्रिड (स्पेन) से हुई थी। इस वर्ष 2026 की पुस्तक राजधानी रबात (मराकश) को चुना गया है। रबात में मेन फोकस, संस्कृतियों को जोड़ने में पुस्तकों की भूमिका पर होगा। इसके अलावा इस वर्ष पुस्तक दिवस का फोकस पढ़ने के साथ साक्षरता पर भी है, जिसमें पढ़ने के घंटे को भी प्राथमिकता दी गई है। आमतौर से शाम को 7 से 8 बजे तक का समय किताब पढ़ने के लिए मुफीद माना जाता है। यानी रोजाना कम से कम एक घंटा किताब पढ़ने की प्रवृत्ति विकसित की जाए, इस पर फोकस किया जा रहा है।

नई चुनौतियां भी कम नहीं

इसके अतिरिक्त इस बात पर भी गंभीर चर्चा हो रही है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की लेखकों के लिए प्रकाशन और कॉपीराइट सुरक्षा में क्या भूमिका होनी चाहिए? यह गंभीर विषय है और पेचीदा भी। एआई कॉपीराइट की परवाह किए बिना किसी के भी कार्य को सार्वजनिक करने की क्षमता रखती है, जिससे लेखकों व प्रकाशकों को नुकसान की आशंका रहती है। लेकिन एआई को नियंत्रित करना भी आसान नहीं है। फिर भी कोई न कोई रास्ता तो निकालना ही होगा। *

कॉपीराइट सुरक्षा पर भी केंद्रित है यह दिवस

इस दिवस को मनाने का उद्देश्य कॉपीराइट सुरक्षा को भी प्रोत्साहित करना होता है, जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है। भारत में कॉपीराइट सुरक्षा 1957 के कॉपीराइट कानून से संचालित होती है, जिसके तहत स्वतः ही मूल साहित्य, नाटक, संगीत, सिनेमेटोग्राफ फिल्म्स/साउंड रिकॉर्डिंग्स सुरक्षित हो जाती हैं। सुरक्षा के लिए पंजीकरण आवश्यक नहीं है, लेकिन विवाद की स्थिति में प्रथम दृष्टया इसे साक्ष्य माना जाता है। कॉपीराइट सुरक्षा आमतौर से लेखक के जीवनकाल और उसके बाद अतिरिक्त 60 वर्षों तक लागू रहती है। यह 60 साल लेखक की मृत्यु के दिन से गिने जाते हैं। कानूनी साक्ष्य के लिए पंजीकरण करा लेना चाहिए, भले ही वह वैकल्पिक हो। इसके लिए कॉपीराइट ऑफिस में अप्लाई करना होता है। फोटोग्राफ, फिल्म, साउंड रिकॉर्डिंग, अज्ञात व सरकारी कार्य का कॉपीराइट प्रकाशन के बाद 60 वर्षों तक रहता है। इस दौरान लेखक को एक्सक्लूसिव अधिकार होता है, अपने कार्य के पुनः प्रकाशन, कापियां जारी करने, परफॉर्म करने, अनुवाद करने या एडॉप्ट करने का। कॉपीराइट उल्लंघन की स्थिति में दोनों दीवानी (मुआवजा), आपराधिक सजा (6 माह से 3 वर्ष की कैद और जुर्माना) का प्रावधान है। सेक्शन 52 के तहत कॉपीराइट उल्लंघन के अपवाद हैं जैसे निजी प्रयोग, शोध, आलोचना, समीक्षा या रिपोर्टिंग।